भारत एवं राजस्थान सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2023-2025

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 8 | अंक 09 | उदयपुर सोमवार 15 मई 2023 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

एक सदी बाद भी कुंद नहीं कानोड़ के चाकू की धार

-डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'-

कानोड़ गांव मेवाड़ के प्रमुख सौलह ठिकानों में से प्रमुख ठिकाना रहा। यहां के चाकू आज उस हर गृहिणी के लिए महत्त्व रखते हैं जिसको अपने हाथों सब्जी से संस्कार के लिए चाकू की ज़रूरत होती है। जब भी कोई परिचित स्त्री कानोड़ का नाम सुनती है, यह कहना नहीं भूलती –

जाओ जो कानोड़ तो चक्कू लेता आजो।
पीतल रा दस्ता वालो, कड़ी आंकड़ी
लाजो।।

लोक के ये भाव उस शिल्पकार के सम्मान के सूचक हैं जो लोहे को उपयोग के अनुकूल बनाता है और पीतल के हाथ में देकर काया पर बागा का बाग लगा देता है। कानोड़ के लोहार परिवार के हुनर के क्या कहने। ठिकाने से लेकर जन सामान्य की आवश्यकता को मिस्त्री चंपालाल राधाकिशन के परिवार ने समझा और आजतक जन मन की नब्ज पर अपनी पकड़ रखी है।

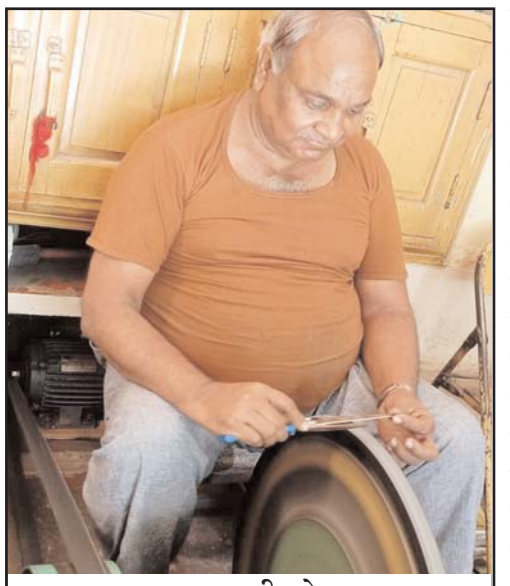

उदयलालजी लोहार

लाख और पाषाण को मिलाकर बनाई जाने वाली सिकली को इस परिवार ने खुद तैयार किया। कुरुक्षेत्र से वैसी सिकली आती थी।

सिकली : हस्त संचालित यंत्र

सिकली प्राचीनतम यंत्रों में एक है। उदयपुर, आमेट, देवगढ़,

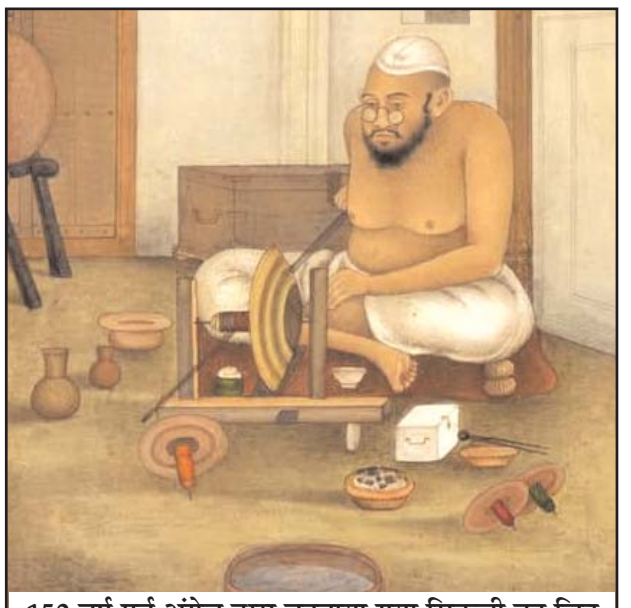

150 वर्ष पूर्व अंग्रेज द्वारा बनवाया गया सिकली का चित्र

चारभुजा, केलवा, आरणी, सनवाड़, जहाजपुर, भीण्डर आदि मेवाड़ में जहां भी पारम्परिक हथियार शोधक लोहार परिवार बसे हैं, वे तलवार, चाकू आदि को चमकाने के लिए सिकली यंत्र रखते हैं। यह देशी यंत्र है।

इसके लिए कुरंद पत्थर कुरुक्षेत्र से उपलब्ध होता। उस पर लाख (जत्तू) और कुरन मिला मसाला लगाया जाता। एकबार चढ़ाया गया मसाला दो साल तक के लिए पर्याप्त होता। कम पड़ने या खराब होने पर नया चढ़ा दिया जाता।

जब भी सिकली बदली जाती या नवीन मसाला चढ़ाया जाता, उसकी पूजा की जाती। उदयलालजी कहते हैं कि देशी सिकली फौलाद तक को घिस सकती है। उन्हें याद है जब घर में ईरान का फौलाद हथियार बनाने के लिए होता था और देशी सिकली को आगे पीछे फेरनी देकर फौलाद को भी धारदार किया जा सकता है। इस सिकली की धार का अंब्री भी मुकाबला नहीं करती। हथियार को पाण देने से ज्यादा जरूरी उनको धार देना होता है।

मेवाड़ में बसे सिकली वाले लोहार परिवार मारवाड़ के मण्डोर से उठे। मेवाड़ के महाराणा राजसिंह अपनी रियासत में हथियारों को बनाने, सुधारने आदि कामों के लिए इन परिवारों को लाए और हर ठिकाने में बसाया। कानोड़ में यह परिवार 1924 में रावजी केसरसिंह की पहल पर बसा और इस तरह अपने आगमन की एक सदी पूरी कर रहा है। सिकली इनके रोजगार का मुख्य यंत्र होने के कारण ही इन्हें सिकलीगर कहा जाता है। कानोड़ की मेरी यात्रा 07 मई 2023 को रही। उदयलालजी से मैंने उनके द्वारा निर्मित चारों तरह के चाकू खरीदे जो मेरे परिजनों के लिए भी पहली पसन्द बने।

शास्त्र में सिकली को 'शाण' कहा गया है। अब तो रेगमाल, एंब्री आते हैं। मत्स्य पुराण कहता है कि सूर्य की किरणें इतनी तेज थी कि विश्वकर्मा पुत्री ने पिता से शिकायत की। विश्वकर्मा ने सूर्य को शाण पर चढ़ाया और तेज को छांट दिया। ऐसे देव यंत्रकार ने भविष्य के लिए भी अपने यंत्र को दिया और उस पर टांकी, छैनी ही नहीं, तलवार, कूट, दरांती, कर्त्रिका, छुरी, कटार आदि अनेक हथियार तैयार किए। युद्ध काल में इनकी सेवाएं बड़े महत्त्व की होतीं। तब तो तोपें भी ढाली जाती थीं।

इस परिवार के उदयलालजी लोहार कहते हैं कि चाकू ने कानोड़ की पहचान कायम रखी है। पिछली सदी में बदनोर, आरणी के चाकू भी बनते रहे लेकिन नई सदी में भी कानोड़ के चाकू की धार कुंद नहीं हुई। चार तरह के चाकू अभी चलन में हैं- बालचाकू, पंचांगुल चाकू, छह अंगुला और फलवाला चाकू। आजकल इनकी कीमत 50, 60, 70 और 80 रुपए हैं। बड़ी बात यह है कि जितना समय बड़ा चाकू बनाने में लगता है, उससे अधिक समय छोटा चाकू बनाने में लगता है। इसलिए छोटे चाकू कम ही बनाते हैं।

सभी पर पीतल का दस्ता होता जबकि फल का एक हिस्सा नुकीला और धारदार होता है। चाकू के खुला और बंद दो रूप होते हैं लेकिन काम आनेवाले चाकू को अमूमन बंद नहीं किया जाता।

भांत-भांत के चाकू

अंगूठे के नख को फल की नाखी में दबाकर और दूसरे हिस्से को अन्य हाथ से पकड़कर चाकू को खोला जाता है। पहली बार प्रयोग से पहले पाण पर तेल की बूंदे डाल दी जाती हैं।

किसानों ने आजकल चाकू को कंदोरे पर तो बांधना कम कर दिया लेकिन रसोई में अभी भी चाकू का तेज कायम है। उदयलालजी चाकू खरीदने वाले को यह कहना नहीं भूलते हैं कि चाकू का सीधे – सीधे प्रयोग करना चाहिए, तिरछा और आड़ा प्रयोग से चाकू टूट जाता है। टूटा लोहा गलाकर ही उपयोग में लिया जा सकता है।

आजकल यह परिवार अच्छी, प्लास्टिक के मुठिया वाली कैंचिया भी बना रहा है और उनकी बड़ी मांग है। कानोड़ की धार की साख ने ही उसकी मांग बराबर बनाए रखी है। हथियार अब नहीं बनते। मांग भी नहीं। मैंने कहा, हमें आशापुरा माता की पूजा के लिए कटार चाहिए। इस पर उन्होंने कहा कि कटारें अब बनती नहीं। कहीं से आ गई तो आपको भेज सकता हूं। अभी तो सैलून वालों का सामान रखकर घर चलाया जा रहा है। मैंने कहा, आपको हर शिल्प मेले में अवसर मिलना चाहिए। हर घर में आपके शिल्प होने चाहिए। मेवाड़ की यह धार कभी कुंद नहीं होनी चाहिए। आपके हाथों की कला हजारों हाथों को चाकू का उपयोग करना सिखाती है।

मेवाड़ की लोहकला :

हथियारों के लिए लोहे का प्रयोग बहुत लंबे समय से होता आया है। मेवाड़ के गवरी नृत्य का बुढ़िया किरदार लकड़ी का खांडा रखता है जो काष्ठ और पाषाण युग का प्रतिनिधि पात्र है। यहां ताम्रकालीन सभ्यता रही है। आहड़ को तांबावती कहा जाता है। गाड़िया लोहारों के पास लोहे के उपयोग की प्रारंभिक कला रही है। वे अपने को मेवाड़ मूल का मानते हैं। मेहरोली का लोह स्तंभ, धार का लोह खम्ब और आबू का लोह शूल मेवाड़ के शिल्पकारों की देन हैं।

शाण पर सूरज को चढ़ाया विश्वकर्माजी ने :

जेठ में सहस्त्रकिरण सूर्य का इतना ताप कि प्रजा बेहाल हो जाती है। बदन पर घाम से घमौरियां निकल जाती और फोड़े हो जाते! सूर्य पत्नी संज्ञया ने अपने पिता विश्वकर्मा से जाकर कहा। सूर्यदेव की किरणों को काटने छांटने का आग्रह किया तो उन्होंने शाण यंत्र चलाया और सूर्य की किरणों को छांट दिया!

मत्स्य पुराण में यह प्रसंग आया है और इसी प्रसंग से विश्वकर्मा की कला सृजन की स्मृतियां आरंभ मानी जाती हैं। हमने महा विश्वकर्म पुराण की भूमिका में इस कहानी को बहुत उपयोगी माना और दक्षिणायन का प्रसंग लिया।

यह प्रतिमा चित्र उसी प्रसंग को पुष्ट करता है। तमिलनाडु में कांचीपुरम में एकांबरनाथ मंदिर है। उसके मंडप के एक स्तंभ पर यह उत्कीर्ण है और बहुत अनन्य है।

पोथीखाना

जैनधर्म : जीवन जीने की कला

प्राकृत साहित्य और जैनविद्या के मनीषी प्रोफेसर प्रेमसुमन जैन ने अपनी नई पुस्तक- 'जतन की जिंदगी : जैन धर्म' में जैन आचार-संहिता की सटीक व्याख्या की है। उन्होंने कहा है कि जैन आचार-संहिता केवल नैतिक नियमों से सम्बन्धित नहीं है, तत्वज्ञान और अध्यात्म से भी वह जुड़ी हुई है। व्यावहारिक दृष्टि से जैन आचार-सहिता जहाँ एकओर व्यक्ति और समाज को नागरिक गुणों से युक्त करती है, वहीं दूसरी ओर पारमार्थिक दृष्टि से वह उसका मुक्तिमार्ग प्रशस्त करती है। वस्तुत: जैन आचार-संहिता में व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक जीवन-पद्धति का समन्वय है। जैन आचार व्यक्ति के गुणात्मक विकास के साथ-साथ पूरी मानव जाति के उत्थान की भावना अपने में समाये हुए है।

पुस्तक में कहा गया है कि जैनधर्म व्यक्ति का उपासक नहीं अपितु गुण का उपासक है। जैन भक्ति का लक्ष्य वैयक्तिक अर्थात् ऐहिक स्वार्थ नहीं, है अपितु आत्मशुद्धि है। आत्मा जब परमात्मा बनना चाहता है तब उसका प्रारम्भिक प्रयत्न भक्ति के रूप में ही होता है। भक्ति आत्मा को परमात्मा बनाने के लिये एक सरल एवं पकड़ सकने योग्य मार्ग है।

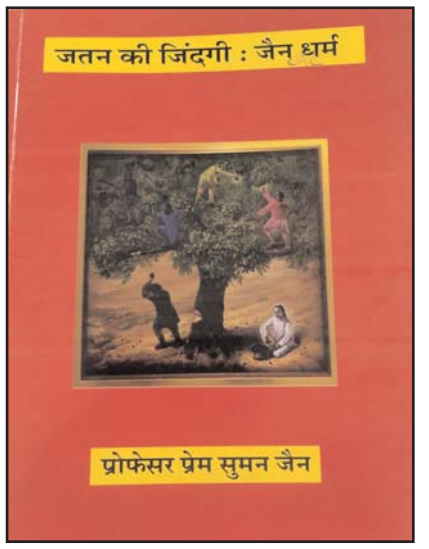

प्रो. प्रेमसुमन जैन के अनुसार पुस्तक में प्रकृति और मनुष्य के सम्बन्ध को जैन आगमों में सूक्ष्मता के साथ प्रतिपादित किया गया है। अनेक अवस्थाएँ वनस्पति और मनुष्य में समान हैं । अत: वनस्पति भी मनुष्य से कम मूल्यवान नहीं है। वनस्पति और वृक्ष मानव जीवन के मूलाधार हैं। संतुलित पर्यावरण का अर्थ जीवन और जगत को पोषण देना है। इस धरती पर जो कुछ दृश्यमान या विद्यमान है, वह पोषित हो, पुष्ट हो। यही पर्यावरण का अभीष्ट है और यह दायित्व चेतनाशील मनुष्य का है। जैनधर्म ने ही सबसे पहले पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और वनस्पतियों को जीव कहा है।

जैन धर्म की बुनियाद है-अहिंसा। इसीलिए अहिंसा को परम धर्म कहा गया है। केवल जैन धर्म ही एक ऐसा धर्म है जिसने अहिंसा की सूक्ष्मातिसूक्ष्म चर्चा की है। प्रत्येक जीव में आत्मा रहती है और सभी आत्माएँ समान हैं । पुस्तक में शाकाहार को एक सुविकसित जीवन-पद्धति माना है, जिसमें अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रम्हचर्य जैसे सात्विक गुणों का महत्व है।

प्रो. जैन ने निष्कर्ष रूप में कहा है कि जतनाचार भेदविज्ञान के महल का प्रथम सोपान है। जैनधर्म के इसी भेदविज्ञान ने आत्मा को परमात्मा बनने का मार्ग प्रकाशित किया है। जैनधर्म सच्चे मायने में अध्यात्मवादी धर्म है। वह कर्मवाद का पक्षपाती है। वह पंथवाद, वर्गवाद एवं जातिवाद आदि की सीमाओं से परे है। वह जतनाचार (जयणा) अल्पीकरण के माध्यम से हमें जीवन को सम्हारने की सार्थक कुंजी थमाता है। बाहर देखने के साथ हमें अपने भीतर झांकने की भी प्रेरणा देता है।

- प्रो. जिनेन्द्रकुमार जैन

दुनिया जैसी डॉ. श्याम मनोहर ने देखी

दुनिया बहुत बड़ी है। सबकी दुनिया अलग-अलग है। पूरी दुनिया देखने का जिम्मा न किसी ने लिया, न वह देख ही पाया तब जिसने जितना जो कुछ देखा, वही उसकी दुनिया बनी। इस दृष्टि से डॉ. श्याम मनोहर व्यास ने अपने जीवनानुभवों में खुली आंखों से जो कुछ देखा उसे साररूप में समेटने का सफल प्रयत्न किया है।

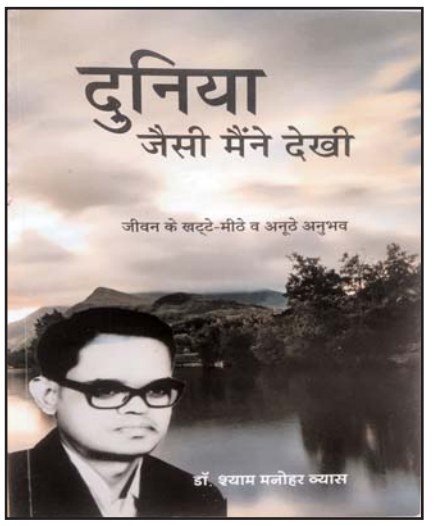

इसका नाम ही 'दुनिया जैसी मैंने देखी' देकर प्रारम्भ में 'पुस्तक के बारे में' शीर्षक से उन्होंने लिखा- यह पुस्तक लेखक की आत्मकथा है, जीवन कथा है। जीवन के कड़वे-मीठे संस्मरणों का समुच्चय है। आत्मकथा लिखना दुधारी तलवार पर चलने के बराबर है। परिजनों, मित्रों एवं पाठकों के कोपभाजन का शिकार होने का भी अन्देशा रहता है पर मैंने इस पुस्तक में पूरा प्रयास किया है कि किसी की भावना को ठेस नहीं पहुंचे। मनगढ़ंत कहानियां इसमें नहीं हैं। घटनाएं सही तथ्यों पर आधारित हैं।

लेकिन पूरी पुस्तक पढ़ने पर लगता है, यह न तो लेखक की आत्मकथा ही बन पाई न जीवन कथा ही। इसमें लिखे जिन खट्टे-मीठे अनूठे अनुभवों का जिक्र उन्होंने किया है, उनमें से बहुत सारे उनके अपने निजी आपबीते नहीं हैं। वे दूसरों के सुने सुनाये हैं जिनका इनसे कतई सम्बन्ध नहीं हैं। पुस्तक पढ़ते समय लगता है, इन्हें अप्रासंगिक रूप से लेखक ने इसमें क्यों स्थान दिया है ?

उदाहरण के लिए चौथा भाग विभाजन की त्रासदी : एक दु:खद अध्याय पृ. 221 से लेकर 266 तक जो कुछ लिखा गया है वह लेखक की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होते हुए भी उनके जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं रखती। अन्तिम उपसंहार के पृ. 271 से 286 तक जो कुछ लेखक ने लिखा है वह भी उनकी आत्मकथा याकि जीवन कथा से कोई सरोकार नहीं रखता है लेकिन सम्भवत: लेखक को यह लगा होगा कि किसी अति विशिष्ट व्यक्ति के साथ कोई-न-कोई सहायक हर समय बना रहता है या फिर जिसे अंगरक्षक की संज्ञा दी जा सकती है। उसकी भूमिका मात्र शोभा बढ़ाने की रहती है। इस दृष्टि से इस पुस्तक में भी उसी तरह का वैशिष्ट्य दिखाने का प्रयत्न किया है।

एक लेखक की दृष्टि से यदि विचार किया जाय तो इसकी सार्थकता ठीक उसी तरह है जिस तरह महिलाएं अपनी हथेली की मेंहदी के केन्द्र में किसी मुख्य अंकन को प्रमुखता देते उसे और अधिक अलंकृत-स्वरूप देने के लिए आसपास और प्रत्येक अंगुली को बिन्दु, रेखा तथा बुन्दकियों से सजाती हैं। आड़े-तिरछे मनभावन अंकनों से तारांकित सजावट करती हैं, यहां तक कि प्रत्येक अंगुली के शीर्षस्थ स्थल पर टोपा देकर जो सौन्दर्य व्यक्त करती है वही भाव इस कृति को सर्वप्रकारेण अपनी लेखनी से सुललाम ललित करने का रहा है। इसमें लेखक कहां तक सफल हुआ है, इसका सटीक जवाब तो पाठक ही दे सकता है।

फिलहाल एक ख्यातनाम लेखक की इस सर्वथा सुन्दर आत्म जीवनी की जीवन्तता पाठकों के लिए संजीवनी सिद्ध होगी, यह कामना करते इस कृति का प्रकाशन स्वागत योग्य है।

शिल्पी प्रकाशन, सी-177, महावीर मार्ग, मालवीयनगर, जयपुर-302017 से 2023 में प्रकाशित 288 पृष्ठीय यह कृति 600 रूपये मूल्य की होने से भी महत्त्वपूर्ण बन पड़ी है।

- डॉ. तुक्तक भानावत

आधुनिक विश्व-रोग

-डॉ. कान्तिलाल यादव -

रमा ग्रीष्मावकाश में स्कूल की छुट्टी के बाद घूमने की लंबी योजना बना रही थी तभी उनके पति अरविंद ने गोवा जाने की योजना बनाई। रेल का टिकट करवा लिया गया। 8 वर्षीय इकलौती बेटी आयुषी बहुत प्रसन्न थी। पापा मम्मी और आयुषी को छुट्टियों में घूमना वरदान सा लग रहा था। उत्तर भारत से दक्षिण भारत की ओर यात्रा रेल से हो रही थी। रेल में और भी लोग और बच्चे ग्रीष्मावकाश की छुट्टियों में घूमने के उद्देश्य से रेल का सफर कर रहे थे।

रेल में सभी बच्चे घंटों मोबाइल में मनोरंजन और खेल के लुफ्त के साथ-साथ अनावश्यक, अश्लील और फूहड़ वीडियो देख रहे थे। साथ ही उनके माता-पिता भी मोबाइल में लगे हुए थे किंतु आयुषी लगातार अलग-अलग किताबें पढ़ रही थी। तभी एक सामनेवाली सीट पर बैठी महिला ने आयुषी की मां से पूछा कि आप तीनों लोग मोबाइल ना देख कर किताबें पढ़ रहे हो। हमें आश्चर्य हो रहा है। आपकी बेटी मोबाइल के बगैर कैसे रह सकती है! तभी आयुषी की मां ने कहा इसके लिए हमने घर में ऐसा वातावरण तैयार किया है । हमारी कार्यशैली को व्यवहार में उतारा है।

हमने अपने जीवन में मोबाइल से ज्यादा किताबों को महत्त्व दिया है। इसके परिणाम से मोबाइल हमसे दूर है और हम किताबों के पास में हैं। तभी मेरी प्यारी बिटिया किताबों के संसार में खो जाती है। किताबों से जूड़कर हम शांति और सुकून का अनुभव कर रहे हैं। मोबाइल और इंटरनेट ने बच्चों को मां-बाप से अलग कर दिया है। एक परिवार के विचार से जुड़ने वाली माला के मोतियों को बिखेर दिया है। एक भयानक दुनिया मैं ले जाने के लिए यह निगल रहा है। बहनजी, आज यह मोबाइल इन नन्हे बच्चों के जीवन का नाश कर रहा है।

इनके बचपन को लूट रहा है। दूषित विचारों का जहर इनके पूरे शरीर में फैल रहा है। बुढ़ापे की जिसे हम लाठी कहते हैं। अभी से बच्चे अलग संसार में प्रवेश कर रहे हैं और मां-बाप इस मोबाइल के कारण अपने बच्चों को संस्कारों से दूर होता देखकर असहाय है क्योंकि वे खुद इस आधुनिक विश्व-रोग से ग्रसित हैं। इतना सुनकर पड़ोसी महिला अपराधी की भांति मौन थी।

धनिया आज भी रो रही है

-डॉ. उषा वर्मा -

शाम ने ओढ़ ली है अंधेरे की चादर
गर्मी की शाम उमस से भरा आसमान
धनिया अभी भी विलाप कर रही है
होरी के बेजान शरीर पर लोटती है
चीखती है चिल्लाती है
आदमी के खोने का दर्द
आक्रोश का ज्वार होठों तक
आता है रूक जाता है
अंगारों से भरी लाल आंखें
सागर बन उमड़ पड़ती हैं
होरी जेठ की दुपहरी में
वेगार खटता रहा,
तपता रहा और
मर गया
धनिया किससे मांगे
उसकी जिंदगी का हिसाब ?
उसका विलाप अभी भी जारी है.....
इसी तरह शाम ढलेगी रात होगी
और सुबह होगी
फिर कोई वेगार बंधुआ
होरी की तरह
दम तोड़ेगा
जेठ की दुपहरी में
शीत से ठिठुरकर
शोषण की मार से
कोई फर्क नहीं पड़ता है
मरना ही उसकी नियति है
गरीब की झोली में
विवसना का दर्द ही बहुत है
पर थोड़ी देर के लिए हम मान लें
कि यदि होरी आज मरता तो
शायद--------
एक भीड़ खड़ी हो जाती
नारे लगते
दुकानें गाड़ियां फूंक दी जातीं
होरी का शव जुलूस में बदल जाता
आक्रोश से रंग जाती दीवारें

तोड़ दिये जाते खिड़की दरवाजे
जलाये जाते सत्ता नायकों के पुतले
पर सब कुछ होते हुए भी
होरी मरता ही क्योंकि
पृथ्वी घूम रही है
आज भी उसी की तरह
सूरज निकलता है दिन ढलता है
पर शोषण के खिलाफ बगावत का
अंजाम वहीं होता है
आम आदमी आज भी वहीं खड़ा है
मालिक और मातहत
अमीर और गरीब का फर्क
कुछ भी तो नहीं बदला है
तुम्हारे होठों पर
समता के दिखावटी स्वर
हमारी आंखों में आशा की किरणें
एक बेचैन तड़प
जीने की अकुलाहट
संविधान की फाइलों में
बंद हमारे अधिकार
और उनके हाथों में
वही दुधारी तलवार
जिसका वार आज भी
उतना ही तेज है
फर्क सिर्फ समय का है
आज प्रजातंत्र है
जनता के लिए जनता का शासन!!!

स्मृतियों के शिखर (164) : डॉ. महेन्द्र भानावत

विभिन्न जातियों में सत परीक्षण देता महिला समुदाय

सत अर्थात् सच को उगवाने, झूठ-सच का पता लगाने के लिए हमारे यहां कई रूपों में परीक्षा लेने के प्रावधान, उपाय याकि तौरतरीके प्रचलन में हैं। इनमें सर्वाधिक रूप में तो अग्नि की साक्षी में ली जाने वाली परीक्षा ही अति प्रचलन में है।

रामायण काल में राम ने सीता की अग्नि-परीक्षा ली थी जिससे सीता का उज्ज्वल चरित्र भारतीय जनमानस में प्रतिष्ठित हो सका और सीता नारी-वर्ग की आदर्श के रूप में सर्वाधिक लोकप्रियता पा सकी।

यह परीक्षा लेकर राम ने अपना नाम ही उज्ज्वल नहीं किया अपितु अपने को सत का पर्याय ही बना दिया इसीलिए मृतक का शव श्मशान में ले जाते समय 'राम नाम सत है' का उच्चारण करते हुए शवयात्री जीवन की सार्थकता का बोध कराते हैं। लोक में क्या पुरूष और क्या महिला ; दोनों के परीक्षण प्रचलित हैं।

राजस्थान में विभिन्न जातियों में सत की परीक्षा के विभिन्न रूप प्रचलित रहे हैं। उनमें से कुछ का दिग्दर्शन यहां द्रष्टव्य है।

पड़ द्वारा सत-परीक्षण :

राजस्थानी लोक-चित्रांकन का एक प्रमुख प्रकार है पड़ चित्रांकन। इस चित्रांकन में मुख्यत: कपड़े पर लोकदेवता पाबूजी और देवनारायण की जीवनलीला चित्रित की हुई मिलती है। इन पड़ों के भोपे गांव-गांव इन्हें फैलाकर रात्रि को विशिष्ट गाथा-गायकी में पड़वाचन करते हैं। इससे पड़भक्त जहां अपनी मनौती पूरी हुई समझते हैं वहीं भावी अनिष्ट से भी अपने को बचा हुआ मान बैठते हैं।

इन्हीं पड़ों में एक पड़ माताजी की होती है। इस पड़ का किसी प्रकार कोई वाचन नहीं किया जाता। बावरी लोग इसके पुजारी होते हैं और अपनी जाति में इसी पड़ की साक्षी में स्त्री के सत की परीक्षा लेते हैं।

तब माताजी की पड़ सबके सम्मुख फैला दी जाती है और माताजी का धूप ध्यान करने के पश्चात पंचायत के सम्मुख उस स्त्री को उफनती हुई तेल की कढ़ाई में हाथ डालने को कहा जाता है। सबके सामने, माताजी की साक्षी में वह स्त्री तेल की कढ़ाई में अपने हाथ डालती है। यदि उसके हाथों पर उकलते तेल का किसी प्रकार का कोई असर नहीं होता है तो वह शीलवान तथा सद्चलनी समझ ली जाती है।

बावरी लोग माताजी की इस पड़ का एक उपयोग और करते हैं और वह है चोरी करने के लिए जाने हेतु शुभ-अशुभ शकुन लेना। कहते हैं कि पड़ जब अच्छे शकुन दे देती है तो ये लोग चोरी हेतु निकल पड़ते हैं और जब सफलतापूर्वक घर लौट आते हैं तो पूजा में माताजी की पड़ का धूपध्यान करते हैं। नवरात्रा में तो नौ ही दिन पड़ को धूपदीप किया जाता है।

पड़ चितेरे श्रीलाल जोशी ने बताया कि चूंकि माताजी की पड़ का उपयोग अधिक नहीं होता है इसलिए ये पड़ें इक्की-दुक्की ही बनवाई जाती हैं परन्तु बावरी लोग बड़ी श्रद्धा और भक्ति से इस पड़ को बनवाकर बड़े यत्नपूर्वक अपने घरों में रखते हैं। उनकी तो यह पड़ की एकमात्र देवी, माताजी और रक्षिका है। अपना प्रत्येक महत्वपूर्ण कार्य-संस्कार ये लोग इसी पड़-देवी की छत्रछाया में सम्पन्न करते हैं।

सत की परीक्षा के हमारे यहाँ और भी कई विधि-विधान बने हुए हैं। सत्य-असत्य की घटनाएँ हमारे जीवन में पग-पग पर मिलती हैं। परिवार और पास-पड़ोस में भी रात-दिन ऐसे घटना-प्रसंग होते रहते हैं। कोर्ट-कचहरी, पंचायत आदि में भी सच-झूठ का पता लगाने के लिए विविध तौर-तरीके प्रचलित हैं। याज्ञवल्क्य स्मृति में ऐसे कई रूपों का उल्लेख है जिनसे सच का पता लगाया जाता था। मनुस्मृति तथा अन्य शास्त्रों में भी ये उल्लेख मिलते हैं।

सांसियों में सत-परीक्षण :

जोशीजी ने एक और किस्सा सुनाते हुए कहा कि सांसी जाति में एक नवोढ़े को सुहागरात के दिन ही अपनी नई नवेली के चरित्र पर सन्देह हो आया तब उसने सुहागरात मनाना छोड़ दिया और आसपास के गांवों के पंचों की साक्षी में

माताजी की पड़

सौलह वर्षीय दुल्हन लीलीबाई की अग्नि-परीक्षा ली गई। सूर्योदय के समय लीली ने तब अग्नि-परीक्षा दी। पहले उसे नहलाकर निर्वस्त्र कर दिया। केवल एक छोटा सा धुला हुआ सफेद लट्ठा ओढ़ने को दिया। फिर उसके दोनों हाथों पर पीपल के पत्ते रखकर कच्चे सूत से उन्हें बांध दिया।

मुहूर्त के अनुसार तब पंचों द्वारा कोई ढाई किलो वजन का लाल गर्म लोहे का गोला उसके हाथ में रख दिया गया और कहा गया कि सात कदम चलकर पास पड़े सरकंडों पर वह गोला रख आये। लीली ने ऐसा ही किया। वह बेदाग बच गई और चरित्रवान सिद्ध हो गई तब दूल्हे राजा को बतौर जुर्माना ढाईसौ रूपया देकर अपनी नवविवाहिता से माफी मांगनी पड़ी। 1

दशामाता कथा में सत-परीक्षण :

होली के दूसरे दिन से दशामाता का व्रत-अनुष्ठान प्रारम्भ हो जाता है। दस दिन तक लगातार महिलाएँ व्रत कर दशामाता की कथाएँ सुनती हैं। प्रतिदिन पांच कथाएँ सुनकर महिलाएँ व्रत खोलती हैं। ऐसी कई कहानियां हैं जो सत असत, मंगल-अमंगल, अच्छा-बुरा, करणीय-अकरणीय के पक्षों को प्रस्तुत कर जीवन में सच पक्ष का सकारात्मक बोध कराती हुई, पारिवारिक एवं सामाजिक रिश्तों-नातों में सुख, सौहार्द तथा सामंजस्य की स्थापना करती हैं।

इन कहानियों में देवी-देवता विभिन्न मानवीय रूप धारण कर गृहस्थों की परीक्षा लेते हैं। सूरजनारायण अपनी पत्नी रानादे को कभी मोची का रूप धारण कर तो कभी कोढ़ी का रूप धर परीक्षा लेते हैं।

एक कहानी में तो सूरज की साक्षी में ही सत की परीक्षा ली जाती है। कहानी के अनुसार रानी के कुंवर को एक बणजारण अपना कुंवर बना लेती है। यह सिद्ध करने के लिए कि वस्तुत: कुंवर किसका है बनजारण का या रानी का; इसके लिए रानी और बनजारिन दोनों को सूर्यदेव के समक्ष खड़ी कर दी जाती है। दोनों हाथ-जोड़ नमन करती हुई सूर्य भगवान से प्रार्थना करती हैं- 'हमारा न्याय आप के हाथ में है। आप जो भी न्याय करेंगे, हमें स्वीकार्य होगा। कुंवर जिसका हो उस नारी की कंचुकी की कसने टूट जायें और स्तन से दूध की धार छूट सीधी कुँवर के मुँह में जा पड़े।'

दोनों की इस कठोर परीक्षा में, देखते-देखते रानी की कसनें टूटती हैं और उसके स्तन से दूध की धार फूट सीधी कुंवर के मुँह में जाकर उसे दुग्ध-पान कराती है। बनजारिन मुँह देखती रह जाती है। 2

अब वह समय नहीं रहा। हमारे जीवन जीने और विकास करने के सोच तथा तौरतरीकों में भी बड़ा बदलाव आया है तब भी कई सारी परम्पराएँ जस की तस बनी हुई हैं। कई लोग उन्हें दकियानुसी और अंधविश्वासों की संज्ञा देते हैं लेकिन सामाजिक मान्यताओं के कारण उनका प्रभाव बना रहता है और मोतबीर लोग मिलकर उन्हें जीवंत बनाये रखते हैं।

जनजाति समाज में सत-परीक्षण :

जनजाति समाज भी इनसे अछूता नहीं कहा जा सकता। सच को उगलवाने के लिए चित्तौड़गढ के कुंभानगर में रह रहे रायचन्द के रात्रि को तीन सौ रूपये चोरी चले गये। उस समय रायचन्द के साथ उसके पांच अन्य और साथी थे। ये छहों प्रतापगढ़ जिले के सालमगढ़ निवासी मीणा जाति के थे। रायचन्द असमंजस की स्थिति लिये था। वह किसका नाम ले, किसको चोर साबित करे, उसके पास कोई प्रमाण तो था नहीं।

अंत में उसने सत का पता लगाने का उपाय खोज निकाला जो उसकी जाति में परम्परा से चला आ रहा था। वह तेल लाया और उसे खूब गर्म किया। खौलते तेल में उसने एक रूपये का सिक्का डाला और अपने साथियों को हाथ से वह सिक्का निकालने को कहा।

इसके लिए रायचन्द स्वयं सबसे आगे रहा। सबसे पहले उसने हाथ डाला। उसके बाद क्रमश: उसके अन्य पांच साथियों - देवीलाल, मोहन, दला, बगसी तथा वारा ने अपना हाथ डाला किन्तु शर्त के अनुसार कोई भी पाकसाफ सिद्ध नहीं हो सका। सबके हाथ बुरी तरह झुलस गये। स्वयं रायचन्द भी निर्दोष सिद्ध नहीं हो सका। इस परीक्षा से कोई निष्कर्ष नहीं निकला और वे स्वयं भी आश्चर्यचकित रह गये कि जब किसी ने रूपये नहीं चुराये तो गये कहाँ। 3

सच की परीक्षा के लिए विशिष्ट आयोजन होते आये हैं। इसके लिए विभिन्न समाजों में अपनी-अपनी विशिष्ट परम्पराएँ रही हैं। किसी धर्मस्थल में, देवी-देवता की शरण में जाकर समाज विशेष का जुड़ाव होता है जहां समाज के प्रमुख, अगुवा लोग मिलकर विधिवत उसका निर्वाह करते हैं। ऐसा भी देखा गया जहां सामूहिक रूप में सत की परीक्षा के लिए विशिष्ट दिवस का चयन हुआ रहता है। इस परीक्षा के दौरान समूह-प्रसादी अथवा गोठ का आयोजन भी बड़ा ही महत्त्व लिए होता है।

आधुनिक युग में सत परीक्षा की प्रासंगिकता के एक सवाल में एक बुजुर्ग ने बताया कि नारी ही सृष्टि की शक्ति स्वरूपा मुख्य धराणी है। उसकी शुद्धि से किसी भी वंश की शुद्धता बरकरार रहती है। वंश जब बिगड़ता है तब सृष्टि की पारदर्शिता धूमिल एवं मलिन होने लगती है। इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है।

सीता का सत परीक्षण :

सीता भारतीय समाज एवं संस्कृति की आदर्श रही और उसी आदर्श के चलते नारी के सतीत्व की परीक्षा का सिलसिला गतिवान बना। राम के चौदह वर्ष वनवास भोगने का समय भी कई दृष्टियों से उल्लेखनीय हुआ और चौदह का अंक विशिष्ट अर्थ का द्योतक बना इसीलिए आज भी समूहबद्ध सत परीक्षा में चौदह नारियों का एक साथ सम्मिलित होना देखा जाता है। राजस्थान के बड़ीसादड़ी कस्बे के हिंगलाज माता मंदिर में वागरिया समाज की चौदह महिलाओं ने सत परीक्षा दी। इन महिलाओं से गर्म तेल में हाथ डालकर पूड़ियाँ निकालने को कहा गया।

समाज के मुखिया गंगाराम के अनुसार उनके समाज में यह परम्परा राजराणा रायसिंह के जमाने से चली आ रही है। जिन पात्रों में महिलाओं ने रात्रि को परीक्षा दी उनमें सुबह देशी घी का हलवा व गुड़ की लापसी का भोज किया गया। 4

उल्लेखनीय है कि राजराणा रायसिंह प्रथम का समय सन् 1622 से 1656 तथा द्वितीय का समय सन् 1743 से 1761 तक का रहा।

सगतीबाण नामक एक हरजस में जब लक्ष्मण के शक्तिबाण लगने से वे मूर्छित हो जाते हैं तब चारोंओर त्राहि-त्राहि मच जाती है। ढूंढ़ पड़ती है कि कौन ऐसा माई का लाल है जो धरती पर निढ़ाल पड़े लक्ष्मण की मूर्छा दूर करे। राम घोषणा करते हैं कि मूर्छा भगाने वाले को आधा राज्य और सवाई धरती का मालिक बना दिया जाएगा।

तब चहुंओर से आवाज गूंजती है कि धरती पर दो ही लाल हैं जो मूर्छा दूर कर सकने का सामर्थ्य रखते हैं। उनमें से एक माता सीता है जो स्वयं सतवंती है और दूसरे हनुमान यति हैं। हरजस में कहा गया है कि माता सीता तो अपने सत के प्रभाव से और हनुमान बूंटी से लक्ष्मण की रक्षा कर सकते हैं। हरजस है-

लिछमण रे लागो रे बाण सगती रे पड्यो धरती।। टेर।।

है कोई अस्यो म्हारा भाई ने जिवावे
आधो राज दूं ने सवाई धरती।। लिछमण....
कै तो जिवावे माता सीता सतवंती
कै कोई जिवावे हड़ुमान जती।।
काम सूं जिवाड़े माता सीता सतवंती
काम सूं जिवाड़े हड़ुमान जती
सत सूं जिवाड़े माता सीता सतवंती
बूंटी सूं जिवाड़े हड़ुमान जती।।

लोकगीतों में सत परीक्षण :

राजस्थान के कांगसिया नामक लोकगीत में भी कांगसिया चुराकर ले जाने वाली पणिहारिनों के लिए हथेली पर गर्म गोले रखकर चोरी का पता लगाने का उल्लेख मिलता है। गीत की पंक्तियाँ हैं -

शेष पृष्ठ सात पर

शब्द रंजन

उदयपुर, सोमवार 15 मई 2023

सम्पादकीय

पुस्तक लोकार्पण

इन दिनों कहा जा रहा है कि पुस्तकें कम छप रही हैं। कम छप रही हैं इसलिए कि पाठकों की संख्या दिन-प्रतिदिन घटती जा रही है। कारण मोबाईल पर सब कुछ देखने, पढ़ने, सुनने को मिल जाता है।

दूसरी ओर यह सुनने को मिल रहा है कि लेखकों की संख्या में आशातीत वृद्धि हुई है। एक-दूसरे में अपने लेखन को छापने की होड़ मची हुई है। प्रकाशन सहयोग देने वाली संस्थाएं भी पहले की तुलना में प्रकाशन सहयोग अधिक उपलब्ध करा रही हैं सो जगह-जगह पुस्तकों का लोकार्पण हुआ देखा जा रहा है। यही नहीं, ऐसे-ऐसे स्थलों पर लोकार्पण समारोह आयोजित हो रहे हैं जहां पहले साहित्य की कोई हवा नहीं बजी सुना गया था। उन समारोहों में पाठकों के अलावा वे लोग भी नजर आते रहे जो साहित्य-समारोहों की बजाय अब तक ब्याह-शादी जैसे समारोहों में ही अधिक देखे गये थे। पारिवारिक संस्कारों, आयोजनों में अवश्य उनकी भूमिका महत्त्वपूर्ण रही और वे आयोजन की शोभा बढ़ाते रहे।

पिछले दस-बीस वर्षों में तो अब वैसे निमंत्रण कार्ड, विवाह की कुंकुम पत्री भी देखने को नहीं मिल रही जिसमें परिवार वालों के नाम तक छपते रहे और कोई पांच-छह दशक तक तो हर कुंकुम पत्रिका पर यह दोहा प्रमुखता से उभरा मिलता, सबका ध्यान आकर्षित करता था-

भेज रहे हैं स्नेह निमंत्रण प्रियवर तुम्हें बुलाने को।
हे मानस के राजहंस तुम, भूल न जाना आने को।।

और समधीजी जहां भी होते, वहां जाकर बड़ी मान-मनुहार द्वारा उन्हें आमंत्रित किया जाता। खास समधणीजी के आने-जाने का खर्चा भी नजर किया जाता था। बहिन-बेटियों को तो महीने भर पूर्व बुलाकर ही विवाह का रंग शुरू किया जाता। पूरा संस्कार था। अब वह सब नई पीढ़ी को तो देखने को ही नहीं मिल रहा है। उसे पता ही नहीं कि ऐसा भी सचमुच में कुछ होता था।

साहित्य में अब लोकार्पण समारोह के रंग प्रभावी भूमिका लिए हो गये हैं। हमारे देखने में ऐसे समारोह आये हैं जिनमें सम्मिलितों को बाद में प्रीतिभोज का आग्रह किया जाता है। ऐसे में पांच-दस हजार से पचास हजार तक का खर्च भी आयोजकों के मुंह से सुनने को मिला है। सर्व सम्मिलितों से प्रशंसात्मक सहानुभूति पाकर आयोजक परिवार धन्य महसूस कर गंगा आरती-सा आत्मीय सुख अनुभव करता है।

एक समारोह तो ऐसा भी हुआ जिसमें लेखक ने अपने सुसराल पक्ष के लोगों को विशेष रूप से आमंत्रित किया जिन्हें पहली बार पता चला कि उनके जामाता जनाब कलम से कुछ कविता-वविता, कहानी-वहानी लिखते हैं तो बिचारे उनके लिए और अपनी बिटिया तथा बच्चे-बच्चियों के लिए पहनने की पोशाक ही ले आये जिसे विवाह के अवसर पर पहरावणी नामक संस्कार कहा जाता है।

यहां तक तो ठीक था पर इससे भी आगे उस लोकार्पण में सास-श्वसुर को वह कुर्सी दे दी गई जहां लोकर्पणकर्त्ता और मुख्य अतिथि भी उनके साथ शोभित थे।

यह सब सुन हमारे एक परिचित मित्र ने कहा कि अब पुस्तक की समीक्षा या तो होती नहीं या फिर लोकार्पण से पूर्व उसी समारोह में समीक्षक-मित्र को यह सम्मान प्रदान किया जाता है जो भरपूर प्रशंसा के पुल बांधता स्वयं ही मगन मस्त हुआ लगता है। अब साहित्य की हर फसल उन्नत और अभिराम हो गई है। कौन देख रहा है कि वह फसल बेमौसम की है, अधपकी है कि सफां कच्ची है कि मावटे से उसे लकवा मार गया है कि वह झुलस गई है कि सम्बन्धित जानकारी के अभाव में पूरी ही बौनी हो गई है।

उदयपुर से संबंधित लोकप्रवाद

मेवाड़ के महाराणा राजसिंह ने राजसमन्द नामक विशाल तालाब बनवाया तथा राज्य के प्रधान दयालदास ने जैन मन्दिर-

नौ चौकी नौ लाख री, दस किरोड़ की पाळ।
साह बंधाया देवरा, राणै बंधाई पाळ।।

एकबार उदयपुर के महाराणा जगतसिंह ने बारहठ हरिदासजी को टोडरमलजी की दानवीरता की जांच करने शेखावाटी भेजा। टोडरमलजी ने गुप्त रूप से उनकी पालकी उठा, कीर्ति गाई-

दोय उदैपुर ऊजळा, दोय दातार अटल्ल।
एक तो राणो जगतसी अर दूजो टोडरमल्ल।।

- डॉ. मनोहर शर्मा

अपना देश अपनी संस्कृति

चेचक का प्रकोप और बोलमापारी का खौफ

आप ना-समझों का अंधविश्वास कहें या पढ़ेलिखों का दृढ़ विश्वास, बात एक ही है। जब कोई बीमारी बुरी तरह आ घेरती है तब स्वस्थ होने के लिए देवी-देवता के नाम नाना प्रकार की बोलमा बोली जाती है। नेम-नियम लिये जाते हैं। व्रतानुष्ठान किये जाते हैं। देव-देवरा धोके जाते हैं। टोने-टोटके, झाड़-फूंख, मंतर-तंतर कराये जाते हैं। दवा-दारू लिये जाते हैं।

जिसके ऊपर आफ़त आये, वो ही जानता है। तब गधे को भी बाप कहना पड़ता है। भिगमंगे के भी आइढ्यां खानी पड़ती हैं मगर काम हुआ कि तोते की तरह आंख बदलने में भी कोई देर नहीं लगती। इसी का नाम संसार है। इस संसार को लोगों ने सारहीन मानते क्षणभंगुर भी कहा और मनुष्य के लिए सर्वश्रेष्ठ उपहार की संज्ञा भी दी। जिसका जैसा सोच के अनुसार यह मनमाने की बात है। कविवर सूरदास ने लिखा- 'दाख छुहारा छोड़ अमृत फल विष कीड़ा विष खात।'

बात चेचक की शुरू करें। आजादी के वर्षों बाद तक इस बीमारी का जानलेवा प्रकोप रहा। यह रोग बच्चों में अधिक होता पर बूढ़ों को भी झपेट में लेता देखा गया। अनेक मौते प्रतिवर्ष इस बीमारी से हो जाती। कभी-कभी इतनी भयंकर बनकर आती कि शरीर का कोई हिस्सा इससे नहीं बचता। अनेक बच्चों की आंखें चली जातीं। पूरे शरीर पर सदैव के लिए चिन्ह रह जाते। अंगुलियों, हथेलियों में होती तो खाने-पीने के लाले पड़ जाते। यह बीमारी फोड़े-फूंसी के रूप में होती और कुचर इतनी चलती कि उससे मवाद निकलने लग जाता। छोटे-छोटे नन्हों के हाथों में तब कपड़े की बनी कोथलियां पहना दी जाती ताकि वह कुचरने से बचाव कर सके।

कई बार कुचरन बढ़ जाती तो उसे कुचरना सुखद लगता। यह कुचरन क्रिया खाज कहलाती। कुचरने पर जो सुख मिलता उसे मीठी खाज चलना कहते। इसी कारण चेचक का दूसरा नाम खुजली अधिक चर्चित हुआ। यह भिन्न-भिन्न रूप लिये होती। छोटी चेचक के दाने छोटे होते। ये ज्वार के दाने की तरह होती।

इससे भी छोटे दाने राई के होते। चने-चंवले जैसे दाने वाली खुजली भी होती। बड़े दाने फफोले कहलाते। इनका होना जबर्दस्त खतरा माना जाने के कारण ही इसे बावजी-माताजी के नाम से सम्बोधित करने की सम्मानजनक परम्परा है।

अनेकों में तो इतना भय व्याप्त हो जाता कि इसका नाम नहीं लेकर 'माताजी' नाम से सम्बोधन सुनने को मिलता तब सब समझ जाते कि चेचक का पदार्पण हुआ है। एक घर में एक को होने पर दूसरे को होने का अन्देशा रहता। मेरे गांव में आज भी ऐसे लोग मिल जायेंगे जिनकी आंखों में चेचक की वहज से फूला पड़ गया। दाग रह जाने के कारण चेहरा विकृत हो गया।

इनके अलग-अलग नाम होते। पांच-पांच कण वाली जगह-जगह निकलने वाली चेचक को 'झूमक्या बावजी' कहते। बड़े-बड़े कण वाली को 'पतास्याजी' कहा गया। अत्यन्त तेजी से एकसाथ आक्रामक रूप में प्रकट होने पर इसे 'आकरा बावजी' नाम दिया गया। कहने का तात्पयर्स यह है कि किसी घर-परिवार में चेचक का आना ही काल की दस्तक देना समझा जाने लगा।

चेचक की देवी शीतला माता कही गई है। इसकी सवारी गधा है। शीतला सप्तमी चेचक माता पूजने का खास दिन है। प्रत्येक गांव में किसी ताल, सरोवर, कुण्ड, बावड़ी के पास पीपल वृक्ष की छाँह तले इसकी मंदरी स्थापित की हुई होती है। देवी के प्रतीक रूप में छोटे-मोटे गोल कण-कंकड़ों की शक्ल लिये पत्थर प्रतिष्ठित किये होते हैं। माताजी को ठण्डा चढ़ावा दही-चावल मिश्रित ओल्या तथा गुड़ के पानी से गेहूं के आटे के बने ढोकले चढ़ाये जाते हैं। इस समय अपनी थाल में इसके साथ मेंहदी कंकू-लच्छा आदि सामग्री के साथ बेसन निर्मित चरके-मीठे फर आदि से युक्त महिलाएं समूहबद्ध गीत गाती माताथड़ा पहुंचती है। इस स्थल पर वे कथा भी कहती हैं।

चेचक के कोप-प्रकोप से मुक्ति पाने के लिए गृहिणियां जो मनौती लेती हैं याकि बोलमा बोलती हैं उनमें माताजी के स्थान से ठण्डी गारा-मिट्टी लाकर फफोलों पर लगाई जाती है। फफोलों पर छनी हुई राख डालते रहने से वे बैइते जाते हैं तब वे चाटे, निशान राखोड़ी रंग के हो जाते हैं। उन पर कुंकुम लगाने से वे लाल-कंकुई रंग लिये लगते हैं।

एक बोलमा हाथेपगे बेड़ी की होती है। इसके अनुसार जिसे चेचक निकली है उसके हाथों-पांवों में लच्छा बांध दोनों हाथों को संयुक्त कर पीछे बांध दिया जाता है। साथ ही उसके सिर पर माटी की बनी छोटी-सी सीगड़ी में एकाध जला अंगारा रख माताजी के स्थान धोक लगाई जाती है। एक बोलमा कुम्हार के वहां से गधा लाकर उस पर रखी गुणती में नमक की डली डालकर माताजी के दर्शनार्थ जाया जाता है। कभी-कभी हरिजन अथवा कुम्हार के घर सात दिन तक पानी भरने की बोलमा में होली के बाद सप्ताह भर एक कलशी में पानी ले जाकर रख दिया जाता है। तत्पश्चात किसी ढोली को एक समचौरस कापड़ा दे दिया जाता है।

विवाह पूर्व खेला नाचने की बोली में जातर यानी गतराड़ा नचाया जाता है और ख्याल करने वाले रासधार्ये से ख्याल कराया जाता है। कुछ लोग माताजी के वहां से हल्दी का गांठिया लाकर पानी के साथ घिस उस घोल को भी लगाते हैं।

इनमें माताजी से पीड़ित बच्चों को बिल्लियों से बचाने की सावधानी अत्यन्त आवश्यक मानी गई है। मान्यता है कि बिल्लियां चुड़ैल रूप लिये होती हैं जो बच्चों को खा जाती हैं। कहा जाता है कि चुड़ैल रात्रि को हनुमान मन्दिर में जाकर अपने कपड़े उतार बिल्ली का रूप धारण कर लेती है। इसके स्तन पीठ पर होते हैं। पांवों के पंजे भी उल्टे होते हैं। जंगल में यदि ये अकेली मिल जांय और निडर हो नग्न हो जाय तो ये उसे कोई नुकसान नहीं पहुंचा भागती बनती है।

शीतला सप्तमी 22 मार्च 1976 को चेचक सम्बन्धी प्रसंग में अनेक जानकारियों से समृद्ध करते मेरी माताजी ने बताया कि ये सब बोलमापारी उसने अपने पीहर में मेरी नानी को करते सुना है। शादी के बाद मेरी दादी के संग भी कुछ बोलमा पूरी है। बाद में तो वह जिसके घर भी यह प्रकोप होता उसे सलाह-मशविरा करने के लिए प्रसिद्ध ही हो गई थी।

एक बोलमा नूंद चोढ़ने की होती है। इसमें पानी घुले आटे का पिण्ड बना कंकू कूलर लच्छा मेंहदी का थाल सजा माताजी को चढ़ा दिया जाता है। लोट बोलने पर बालक की माता देवरे जाकर माताजी के सम्मुख लोटन लगाती है। यह बोलमा चेचक पीड़ित बच्चा जब परेशान हो लोटन लगता दिखता है तब बोली जाती है।

ठेठ बोलमा में माताजी के मुख्य स्थान वल्लभनगर जाकर वहां स्थित शीतला माताजी के मन्दिर ले जाकर बालक को धोक लगवाई जाती है। इसके साथ ही माताजी को सवा हाथ का ओरनी-घाघरा और एकी की संख्या लिये पांच अथवा सात नारियल का पिण्डावड़ा चढ़ाया जाता है। वल्लभनगर उदयपुर जिले का गांव है। यहां शीतला माता का बड़ी मान्यता प्राप्त मन्दिर है। इसका पूर्व नाम ऊंठाला था। आजादी के बाद सरदार वल्लभभाई पटेल एक बार वहां गये तब उनकी स्मृति में ऊंठाले का नाम बदल वल्लभनगर कर दिया गया।

उल्लेखनीय है कि मेवाड़ में चार स्थलों पर चार माताजी के स्थान बहु प्रसिद्ध हैं। इनमें अन्य तीन में आवरी माता, एलवा माता तथा वरेकण माता हैं। ये चारों बहिनें हैं। इनमें ऊंठाला सबसे बड़ी है। एलवा माता डूंगला के पास तथा वरेकण माता का स्थान भीण्डर के पास है।

आवरी माता लूले-लंगड़ों, हवा मे आये लोगों तथा लकवाग्रस्तों को ठीक करने वाली माता है। एलवा सुबह, दोपहर तथा शाम को क्रमशः बाल, प्रौढ़ तथा वृद्ध रूप में दर्शन देने वाली है। ऐसे ही वरेकण माता के भी कई चमत्कार हैं। मैंने इन चारों तीर्थस्थलों के कमाल देखे और अपने अनुभवों का खुलासा भी किया है।

- म. भा.

रेत के झूंपों में संगीत की स्वर लहरियां देते वादक

- डॉ. महेन्द्र भानावत -

राजस्थान का उत्तर-पश्चिम भाग रेगिस्तानी है। यहां मुख्यत: लंगा और मांगणियार नामक दो जातियां हैं जो पेशेवर गायक-वादक के रूप में पूरे विश्व में अपनी विशिष्ट पहचान रखती हैं। इनमें प्रचलित अनेक त्यौहार हिन्दुओं के त्यौहार-उत्सव-रीति-रिवाज की मान्यता लिये हैं। इनका कहना है कि वे चौदह पीढ़ियों तक हिन्दू थे।

सुधा राजहंस के अनुसार लंगों का सामाजिक संगठन नख तथा जातिमूलक है। इसका नख सोलंकी, पंवार, तंवर, गवरी, भाटी आदि है जो राजपूतों की प्रशाखा लिए है। जाति रावरिया, झंझरिया, पन्तुका आदि नाम लिये है। यों जिस प्रमुख जजमान जाति में ये गाते बजाते हैं वही इनकी जाति भी है यथा झंझरिया, पन्तुका भैया (जाति) तथा झंझ, भाटी, पंवार, भैया (नख)।

लंगा का एक समुदाय और भी है- सारंगिया तथा सुरणाइया। सारंगिये सारंगी वाद्य के साथ गायन करते हैं जबकि सुरणाइया सुरणाई अर्थात् शहनाई, सतारा अर्थात् दो बांसुरी का संयुक्त वादन तथा मुरली अर्थात् पूंगी का वादन करते हैं। गाते नहीं हैं। मुस्लिम यजमान होने के नाते ये मोहरों के वहां बजाने के कारण मोहरिया, मंगलियों से मंगलिया तथा राजड़ों से राजड़िया कहलाये।

यही नहीं, इन जातियों की विशेषज्ञ सुधा राजहंस का यह कथन भी उल्लेखनीय है जिसमें वह कहती हैं कि इन गायक-वादकों की अपनी एक विशिष्ट पद्धति है जो लोकसंगीत की सीमा-रेखा को पार कर उप शास्त्रीय संगीत की रेखा को छूती हुई चलती है। कहीं-कहीं गायन-वादन में शास्त्रीय संगीत का आभास भी होने लगता है। गीत की विशिष्ट बंदिश में जो गायकी चलती है वह जांगड़ा कहलाती है।

कहा जाता है कि नाथ सम्प्रदाय की पौने चौदह शाखाओं में तेरह पूरी, आधी अघोरी तथा पाव कालबेलिया है। कालबेलिया से तात्पर्य मौत को जीतने वाला, नाग को संरक्षण देने वाला है। सामान ढोने के लिए गधा तथा अन्यों में मुर्गे-मुर्गी, पालतू जानवर तथा शिकारी कुत्ता रखते हैं। इडोणी, पणिहारी, शंकरिया आदि सांप को मोहित करने वाली धुनें हैं। पूंगी के अलावा खंजरी, चंग तथा घोरलियो भी इनका प्रिय वाद्य है।

सांपों की कई प्रजातियां हैं। तक्षक सबसे जहरीला होता है। रामानन्दी सोमवार, पूर्णिमा तथा अमावस्या को निराहार रहता है। साधारण सांपों को नोकुली धुन से वश में कर लेते हैं पर जहरीले नागों को मंत्र के बल पर वशीभूत किया जाता है। पांच सौ वर्ष वाले नाग के फन पर सफेद मूंछें उग आती हैं। किसी सपेरे की पेटी में सांप की मौत होने पर दण्ड का प्रावधान है। यह दण्ड 25-50 रूपया तथा तीन दिन जाति बहिष्कृति का है। फिर सपेरा पुष्कर तथा गलता जैसे पवित्र सरोवर में डुबकी खाकर आता है तो उसे जाति में सम्मिलित कर लिया जाता है। यों सांप के कान नहीं होते हैं पर उसके गलफड़े सुनने का काम करते हैं। उसके मुंह के सामने दो दांत होते हैं जिनसे वह काटता है। इसके अलावा बाल की तरह बारीक 160 दांत होते हैं।

कमाल के लिए कमायचा ही काफी है :

'घोखत विद्या, खोदत पाणी' के अनुसार रटन शक्ति से विद्या आती है तथा खोदते-खोदते पानी उपलब्ध होता है। नदी के छोटे रूप वेरे-वेरी के किनारे की रेतीली भूमि की रेत हटाते-हटाते खड्डे में जब पानी आता है तो उससे प्यास बुझाई जाती है। पानी की प्राप्ति के लिए कुए खोदने के पीछे भी यही भाव रहा है। विद्या भी बार-बार रटने, घोखने से आती है। पहले स्कूल का आखिरी पीरियड पहाड़े बोलने का रहता था। तब मॉनिटर बोलता और बाकी सब उसे दोहराते। यह आवाज ही इतनी तेज होती कि आसपास ही नहीं, दूर-दूर तक के घरों में सुनाई देती।

ऐसा ही वाद्य वादन का सिलसिला है। बचपन से ही पिता की देखादेख बच्चा भी सीखता रहता है। यह स्थिति सारी लोक प्रचलित

कमायचा वाद्य

शिल्पकलाओं की है। विरासत से परम्परा से कोई हुनर ऐसे ही एक पीढ़ी से दूसरी और दूसरी से तीसरी में हस्तांतरित होता रहता है। रेगिस्तान में प्रचलित वाद्यों के साथ यह धारणा अधिक पुष्ट रूप में पाई जाती है। सीखने की ललक कहिये या सहज प्राप्त संस्कार से तो कोई कला-शिल्प पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती ही है पर निरन्तर अभ्यास से भी किसी कला में पारंगतता प्राप्त की जा सकती है। इसीलिए कहा गया है- 'करत-करत अभ्यास से, जड़मति होत सुजान।'

कमायचा वादक हकीमखां

यही स्थिति कमायचा के साथ है। ईरान का यह बाजा अरबों के साथ भारत आया और अपनी पैठ बना ली। यह तार वाद्य एक तार से लेकर चार तार लिए होता है। तार पर रगड़ी देने के लिए बकरे की आंतों को साफ कर उसकी तीन तांतों वाला गज बनाया जाता है। दो से ढाई फीट वाला यह वाद्य मांगणियारों का खास वाद्य है।

रेगिस्तान में सुलभ रोहिड़े, आकड़े या फिर अखरोट की लकड़ी से निर्मित कमायचे की तबली बड़ी होती है जिस पर बकरे की खाल चढ़ी होती है। इस खाल की यह खासियत होती है कि यह पतली, कामल, ठीक तरह से चढ़ाने वाली तथा मधुर आवाज वाली होती है। सहज उपलब्ध भी हो जाती है। अन्य वाद्यों से भिन्न इसकी तबली के ऊपर एक कोने में लकड़ी की चांदी-घोड़ी लगाई जाती है। इसके सहारे से तार कमायचा के ऊपरी सिरे पर लगी खूंटियों से लपेट दिया जाता है। लकड़ी की ये खूटियां मोरनियां नाम से जानी जाती हैं।

कमान जिसे गज कहते हैं, इन्द्रधनुषाकार गोलाई लिए होता है। इसको बकरे की आंत सूखाकर, आक के पौधे के दूध में भिगोकर तान दिया जाता है। यह गज-कमान जब तारों पर चलने लगती है तो जो ध्वनियां निकलती हैं वे ही विविध राग-रागनियों की बन्दिशों में बांध दी जाती हैं। यह समझाबुझा कोई कुशाग्र, होशिया, अनुभवी कलाकार की ही पटुता से सुनने को मिलता है।

मनुष्य ने सबसे बड़ा आविष्कार किया- देवता या ईश्वर का। उसने इसका होना, इसका रूप-स्वरूप, यह क्या करता है इत्यादि सब तय किया और फिर अपने इस आविष्कार के पूरी तरह अधीन हो गया। विभिन्न मानव-समूहों ने इसके अपने अलग-अलग नाम-स्वरूप आदि माने और फिर इन नामों-स्वरूपों को लेकर परस्पर लड़ने-भिड़ने, मारकाट भी करने लगे। देवतावाद की कल्पना विश्वभर में मनुष्य जीवन की प्रधान प्रवृत्ति है जो मनुष्य के जीवनकाल की ही नियामक नहीं अपितु मृत्यु पश्चात के जीवन की भी कल्पना कर मनुष्य के आचरण, उसके विचारों, भावनाओं एवं व्यवहारों को दण्डात्मक नियंत्रण में रखती है।

धार्मिक दृष्टि से कथित हिन्दू धर्म की यह विशेषता बन गई है कि यहां शास्त्र का कोई अनुशासन नहीं है और मान्यताओं, आस्थाओं की अपार स्वच्छन्दता है। शास्त्र कट्टरता उत्पन्न कर देता है जबकि लोकत्व उदार होता है। यह उदारता भारतीय धर्म-संस्कृति की सनातनता के मूल में है। यहां तो स्पष्ट कहा गया है कि शास्त्र और लोक (लोकाचार) में विरोध हो तो शास्त्र को एक तरफ रखदो। 1

कमायचे का वादन कलाकार बैठकर अपनी गोदी में रख, सीने से सटाकर, एक हाथ से कमान-गज को चलाते दूसरे हाथ की उंगलियों तथा नाखूनों से तार को झंकृत कर मनचाही धुनें निकालता है।

बाड़मेर जिले की शिव तहसील के कमायचा वादक हकीमखां ने इसमें महारत हांसिल कर अनेकों कार्यक्रमों को गरिमा प्रदान कर बड़ा नाम कमाया। अपने देश के अलावा विदेशों में रूमानिया, फ्रांस, ब्रिटेन, मंगोलिया, बुल्गारिया जैसे बड़े-बड़े देशों में सांस्कृतिक आदान-प्रदान के तहत उनका भ्रमण उन्हें बहुत कुछ उपलब्धियां देने वाला बना।

हकीमखां ने कभी यह कल्पना भी नहीं की कि उनके जीवन में ऐसा वक्त आयेगा जब वे अपने झूंपड़ में से निकलकर इतना घूमेंगे और हवाईजांज का सैरसपाटा कर अलग-अलग वानगी के लोगों से मिलेंगे और कमायचा के कारण उन तक पहुंच सकेंगे।

जीणा मांगणियार हकीमखां अन्यों की तरह बचपन से ही अपने घर में पिता उस्मानखां को बजाते देख कमायचा से खेलने लग गये। पिता ने चाहा कि दूसरे उस्तादों से वे भी ज्यादा अच्छी तरह खुलकर सीख सकें। अत: उन्होंने मुझे हुसैनखां तथा उनके शिष्य जूसूबखां डांगरी के पास नियमित अभ्यास के लिए भेजना शुरू किया। यही नहीं, अपने भाई उकाखां तथा राणाखां के साथ भी संगत कर अपने अनुभव से उंगलियों को अभ्यस्त कर यह मुकाम हांसिल किया।

हकीमखां की महत्त्वपूर्ण सीख यह रही कि उन्होंने पुरानी रागों को कमायचा पर खरी करते नई रागों को भी अपनाया। पुरानी रागों में काफी, माण्ड, भैरवी, कल्याण, मरू, जोग, सोरठ, खमाज, गूंड मल्हार तो फिर भी अधिक चर्चित रहीं पर सूब, छमेरी, धोनी, वरागड़ो, मांझ जैसी रागों को जो भुला दी गईं, पर भी हाथ साफ किया।

यही नहीं, खमाजी राग में बनड़ा, खमा, अंतरियो, हालरियो; कल्याण राग में गोरबन्द, झूलेलाल; सारंग में पिणिहारी, पपईयो, बरहालो, फूवागर; समेरी में चढ़िया, सगार, चढ़िया सियारी; गूंड मल्हार में हरजस, ऊंटां री असवारी; भैरवी में आयल, बनड़ा, अरणी, डोरो तथा खमाज राग में हालरिया प्रस्तुत कर जो समां बांधे उनसे संगीत में रूचि नहीं रखने वाले भी अभिभूत हुए मिलते हैं।

हकीमखां के अनुसार समय के बदलाव के साथ उनका संगीत भी नीचे उतरता जा रहा है। पहले की रागें पन्द्रह-सौलह मात्रा लिए होती थीं जो उतरते अब पांच-छह तक सिमट गई हैं। ऐसा होता हुआ लगने पर भी कमायचा बजाने वालों में बसायोखां रामसर, बीओ भादेसर, फजलाखां बांद्रा, गफूर नोबला, लूणा, आमद हडबा, सदीक तथा चांदरवाखां बीसू, जूसूब, पोपड़, कावलिया भीयाड़, जूसूब बेहड़ो, कल्ला लखा, हीलो बिशाला, आमद आरंग जैसे कलाकार हैं जो अपनी विरासत बचाने में लगे हुए हैं।

लेकिन लग रहा है, यह उनकी आखिरी पीढ़ी है। कारण एक तो यजमान भी बहुत कम रहे हैं। पहले के यजमान बड़े समझू थे। वे उनका आदर कर पूरे मन से सुनते, उनका उत्साह बढ़ाते और सम्मान स्वरूप भेंट भेंटावण भी यादगार वाली देते। खेत, जमीन, पशु देते जिससे उनका परिवार चलता। अब यजमानों में वैसी सोच नहीं, समझ भी नहीं और सुनने में रूचि भी नहीं रही। कलाकारों के बालकों में भी सीखने की रूचि नहीं रही। उन्हें भी लगने लगा कि वे अगर ठोक-पीटकर सीख भी गये तो भूखों ही मरेंगे।

इतना सबकुछ होने पर भी कमायचे के प्रति उनकी रूचि बनी हुई है। इसके साथ उनकी पीढ़ियों का जुड़ाव बना हुआ है जो उनसे अलग हो नहीं सकता अत: वे भी चाहते हैं कि इसके बहाने बच्चों में भी यह धरोहर बजती, सजती रहे अत: वे अपने पुत्रों में बरियाम को कमायचा, कुटल को ढोलक तथा लतीफ को खड़ताल वादन और गायकी में दक्ष कर रहे हैं। वे आशान्वित हैं कि आने वाला जमाना फिर इन कलाकारों की कद्र करेगा और वैसे ही कद्रदान होंगे जो हमारी सुध लेंगे। तब वे ढूंढ़ते फिरेंगे कि वे वादक, गायक कहां होंगे जिनसे जानकर, सीखकर दूसरे बालक होशियार बनें।

इसलिए हकीमखां अपने पीछे अपने घर-परिवार में ऐसी विरासत छोड़ना चाहते हैं जो उनकी पुरानी सभी पीढ़ियों की संगीत गायकी को रूजक-रोटी से जोड़ते जिन्दा रख सकें। उन्होंने एक कहावत भी कही जो इधर कुछ इस रूप में प्रचलित है- 'पड्यो पोटो धूल लेइने उठे' अर्थात् कोई भी चीज यदि ठीक से संरक्षित है तो उसकी कभी-न-कभी कद्र निश्चित है जैसे जमीन पर पड़ा गाय का गोबर उठाने पर उसके साथ मिली धूल-मिट्टी भी आती है।

संदर्भ सूत्र :

1 : भारतीय देवतावाद की सनातनता, डॉ. बाबूलाल शर्मा, सम्पादकीय, वैचारिकी, कोलकाता, मार्च-अप्रेल- 2022

क्रमश :

बाजार / समाचार

सिंघवी महावीर युवा मंच के महासचिव मनोनीत

उदयपुर (ह. सं.)। समग्र जैन समाज की संस्था महावीर युवा मंच के महासचिव पद पर नीरज सिंघवी को मनोनीत किया गया है जबकि मुख्य संरक्षक प्रमोद सामर होंगे।

अध्यक्ष नरेन्द्रकुमार जैन ने नई कार्यकारिणी की घोषणा करते हुए बताया कि उपाध्यक्ष रमेश सिंघवी, राजेश जैन, अजय पोरवाल, संजय नागौरी तथा महेश कोठारी, मंत्री कमल कावड़िया, बसंत खिमावत तथा सतीश पोरवाल, कोषाध्यक्ष ओमप्रकाश पोरवाल, संगठन मंत्री दिलीप मोगरा, प्रचार-प्रसार मंत्री मनोज मुणेत, कार्यालय प्रभारी विक्रम भंडारी, महिला प्रकोष्ठ प्रभारी हर्षमित्र सरूपरिया, महिला प्रकोष्ठ अध्यक्ष श्रीमती मधु सुराणा तथा मंत्री शुभा हिंगड़ होंगे। इसके अलावा परामर्शक मंडल में सर्वश्री निर्मल पोखरना, राजेश चित्तौड़ा, डॉ. तुक्तक भानावत, आलोक पगारिया, अर्जुन खोखावत, अरविंद सरूपरिया, अशोक लोढ़ा, भगवती सुराणा, कुलदीप नाहर, डॉ. लोकेश जैन, मुकेश हिंगड़, डॉ. स्नेहदीप भाणावत होंगे।

सीवीडी डायमंड ज्वेलरी प्रिस्टीन डायमंड्स पर उपलब्ध

उदयपुर (ह. सं.)। सोने और नैसर्गिक रुप से निकाले गए हीरों की कीमतों में हो रही बढ़ोत्तरी के चलते अब ग्राहक पर्याय लैब ग्रोन डायमंड्स को प्राथमिकता दे रहे है। उदयपुर के मिलेनियल्स में बढ़ती हीरो की चाहत के मद्देनजर लाईमलाईट लैब ग्रोन डायमंड्स के सबसे बड़े उत्पादक ब्रान्ड की ओर से अब यह आभूषण अशोकनगर स्थित प्रिस्टीन डायमंड्स ज्वेलरी स्टोअर में उपलब्ध होंगे।

लाईमलाईट लैब ग्रोन डायमंड्स की संस्थापिका श्रीमती पुजा शेठ माधवन ने कहा कि भारत, लैब ग्रोन डायमंड्स के उत्पादन में ही केवल अग्रणी नहीं है बल्कि यहां ग्राहकों की संख्या भी बढ़ी है। लैब ग्रोन डायमंड्स के प्रति लोगों में जागरुकता तेजी से बढ़ रही है। ग्राहक अब इन डायमंड्स के विषय में काफी शिक्षित हैं। लैब ग्रोन डायमंड्स का व्यक्तित्व यह है की वे सस्टेनेबल और इको फ्रेन्डली जेमस्टोन है, उन्हें मिलेनियल पीढ़ी ने आसानी से अपनाया है। संपूर्ण भारत में लैब में बने हीरो से बने आभूषणों की बिक्री से यह आसानी से दिखाई देता है। प्रिस्टीन डायमंड्स की ओनर श्रीमती लोमा सुहालका ने कहा कि अधिकाधिक ग्राहक लैब ग्रोन डायमंड्स को प्राथमिकता दे रहे है। ग्राहकों में जागरुकता है और वे इकोफ्रेन्डली हीरो के बारे में और जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं। यह टिकाऊ हीरे सुंदरता के स्तरों पर खरे है और अब युवाओं की पहचान बन चुके हैं।

लघुकथा संग्रह 'हाल-ए-वक्त' पुरस्कृत

उदयपुर (ह. सं.)। प्रज्ञा साहित्यिक मंच, रोहतक द्वारा जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ के डॉ. चंद्रेशकुमार छतलानी को उनकी लघुकथा की पुस्तक 'हाल-ए-वक्त' हेतु प्रज्ञा वैश्विक आजीवन लघुकथा साधना सम्मान 2023 से अलंकृत किया गया।

प्रज्ञा मंच द्वारा आयोजित प्रज्ञा वैश्विक लघुकथा प्रतियोगिता में 'हाल-ए-वक्त' ने प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। सम्मान वरिष्ठ लघुकथाकार मधुदीप जयंती उत्सव में अध्यक्ष डॉ. मधुकांत, संरक्षक प्रो. शामलाल कौशल व संयोजक डॉ. जय भगवान सिंगला द्वारा प्रदान किया गया। सम्मान के तहत सम्मानपत्र, शॉल व 5100 रुपए प्रदान किये गए।

कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत ने डॉ. छतलानी को बधाई दी। विश्व भाषा अकादमी के राष्ट्रीय चेयरमैन मुकेश शर्मा ने कहा कि इस तरह के सम्मान हिंदी को प्रमुख दर्जा दिलाने में एक बड़ा योगदान देते हैं।

कस्टमाइज्ड प्रोग्राम 'विशेष' लॉन्च

उदयपुर (ह. सं.)। एचडीएफसी बैंक ने देश के अर्ध शहरी और ग्रामीण अंचलों (एसयूआरयू) में अपनी उपस्थिति का विस्तार करने की योजना बनाई है। इस मजबूत प्रयास के एक हिस्से के रूप में अधिक से अधिक शाखाओं को ब्रांच नेटवर्क में जोड़ने और इस बाजार वर्ग के लिए कस्टमाइज्ड उत्पादों को लॉन्च करने का इरादा है। बैंक इन स्थानों पर चालू वित्त वर्ष में 675 से अधिक शाखाओं को जोड़ने की तैयारी कर रहा है ताकि शाखाओं की कुल संख्या 5000 के करीब हो जाए।

बैंक ने एसयूआरयू क्षेत्रों के लिए एक इंडस्ट्री-फर्स्ट, कस्टमाइज्ड प्रोग्राम 'विशेष' लॉन्च किया है। यह एक अनूठा कार्यक्रम है क्योंकि यह फाइनेंशियल और वेलनेस लाभों का मिक्स प्रदान करता है और अर्ध शहरी और ग्रामीण भौगोलिक क्षेत्रों में ग्राहकों को एक प्रीमियम बैंकिंग अनुभव प्रदान करने के लिए तैयार किया गया है। समर्पित पर्सनल बैंकर, परिवार के 8 सदस्यों तक बढ़ाया जा सकता है, गोल्ड लोन और वैल्यूएशन: गोल्ड लोन में प्रोसेसिंग फीस पर 50 प्रतिशत तक की छूट और वैल्यूएशन पर 50 प्रतिशत की छूट (साल में एक बार), प्रोसेसिंग फीस पर 50 प्रतिशत तक की छूट: निर्माण उपकरण, ट्रैक्टर, व्यक्तिगत, व्यवसाय, ऑटो और दोपहिया ऋण पर, दैनिक हॉस्पिकैश लाभ (5 दिन तक), वार्षिक प्रिवेंटिव हेल्थ चैकअप 3000 रुपये तक, 45 से अधिक लैब टेस्ट पैकेज के साथ एक वार्षिक मानार्थ और कैशलेस स्वास्थ्य जांच, असीमित टेली हेल्थ कंसल्टेशन, साझेदारी के माध्यम से मृदा परीक्षण, कृषि सलाह, ड्रोन छिड़काव, और कृषि मशीनरी रेंटल जैसी इस प्रोग्राम की प्रमुख विशेषताएं हैं।

एचडीएफसी बैंक और टीएएसके में करार

उदयपुर (ह. सं.)। एचडीएफसी बैंक, भारत का सबसे बड़ा निजी क्षेत्र का बैंक, और तेलंगाना सरकार के आईटीईएंडसी विभाग के तहत एक गैर-लाभकारी संगठन तेलंगाना एकेडमी फॉर स्किल एंड नॉलेज (टीएएसके) ने एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। इस नए करार के तहत नए स्नातकों और स्नातकोत्तरों के रोजगार को बढ़ावा देने के लिए एमओयू के अनुसार, एचडीएफसी बैंक अब 'टास्क' के साथ रजिस्टर्ड (पंजीकृत) 700 संस्थानों में प्रतिभा के एक बड़े पूल तक पहुंच बनाने में सक्षम होगा।

श्रीकांत सिन्हा, सीईओ-टास्क और रंगा सुब्रमण्यम, हेड-टैलेंट एक्विजिशन, एचडीएफसी बैंक ने तेलंगाना सरकार, टीएएसके और एचडीएफसी बैंक के अधिकारियों की उपस्थिति में हैदराबाद में एमओयू पर हस्ताक्षर किए। साझेदारी के तहत, टास्क, प्रशिक्षित छात्रों को हायर करने में एचडीएफसी बैंक की मदद करेगा। टास्क द्वारा प्लेसमेंट ड्राइव और साक्षात्कार के लिए सभी प्रकार की लॉजिस्टिकल सहायता प्रदान की जाएगी।

रंगा सुब्रमण्यम ने कहा कि एचडीएफसी बैंक देश भर में नई प्रतिभाओं को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है। हम एक समान अवसर संगठन हैं जहां हर किसी को एक्सीलेंस प्राप्त करने और अपनी अधिकतम क्षमता तक बढ़ने के लिए एक इकोसिस्टम दिया जाता है। टीएएसके के साथ हमारी साझेदारी नई पीढ़ी के लिए एक प्रमाणित 'ग्रेट प्लेस टू वर्क' में अपना करियर शुरू करने के लिए दरवाजे खोलेगी, जो लाखों लोगों को आर्थिक रूप से सशक्त बना रहा है और राष्ट्र निर्माण में योगदान दे रहा है। एचडीएफसी बैंक 1,70,000 से अधिक कर्मचारियों के सक्रिय कर्मचारी आधार के साथ देश के सबसे बड़े नियोक्ताओं में से एक है।

नई डिफेंडर 130 आउटबाउंड लॉन्च

उदयपुर (ह. सं.)। डिफेंडर की उत्पाद श्रृंखला में नई डिफेंडर 130 आउटबाउंड की पेशकश की गई है। इसके साथ ही 368 डिफेंडर 130 वी8 और डिफेंडर 110 के लिए नई विरासत से प्रेरित काउंटी एक्सटीरियर पैक को भी पेश किया गया है। डिफेंडर ब्रैंड की इन एसयूवी में ये नए फीचर्स ग्राहकों को पसंद के लिए और ज्यादा विकल्प प्रदान करते हैं। ऊबड़-खाबड़ सड़कों पर इसकी शान से चलने की क्षमता गजब की है। इसमें उपभोक्ताओं के आराम का पूरी तरह ख्याल रखा गया है।

डिफेंडर के प्रबंध निदेशक माइक कैमरून ने कहा कि डिफेंडर 130 आउटबाउंड डिफेंडर रेंज की गाड़ियों में हैरतअंगेज ढंग से जोड़ी गई नई एसयूवी है, जिसकी काफी लंबे समय से मांग की जा रही थी। यह रोमांच को पसंद करने वाले हमारे उन अधिकतर उपभोक्ताओं के लिए बेहतरीन गाड़ी है, जिन्हें बाहर जाना और नई-नई जगहों की खोज करना बेहद पसंद है। उन्हें गाड़ी में पांच यात्रियों के बैठने की जगह के साथ काफी मात्रा में सामान रखने के लिए जगह भी चाहिए होती है। बेहतरीन डिजाइनिंग और अंदर बैठने की काफी जगह के लिहाज से यह क्षमता और व्यवहारिकता का अनूठा संगम है। 4×4 फैमिली की यह एसयूवी हरेक के लिए कुछ न कुछ प्रदान करती है। डिफेंडर 130 में वी8 पावर ट्रेन है, जबकि नया काउंटी एक्सटीरियर पैक डिफेंडर की मूलभूत विशेषताओं का आधुनिक और क्लासिक डिजाइन के साथ जश्न मनाता है। नई डिफेंडर 130 आउटबाउंड आरामदायक इंटीरियर स्पेस और सभी तरह की सड़कों पर चलने की क्षमता के जबर्दस्त कॉम्बिनेशन से असंभव को संभव बनाती है।

ज़िंक को खनन क्षेत्र में देश की पहली महिला माइन रेस्क्यू प्रशिक्षित टीम का गौरव

उदयपुर (ह. सं.)। प्राकृतिक संसाधन प्रमुख वेदांता समूह की जिंक-लीड-सिल्वर उत्पादक कंपनी हिन्दुस्तान जिंक की एक बड़ी पहल के तहत राजस्थान में खनन कार्यों में अत्यधिक सुरक्षा रखरखाव सुनिश्चित करने के लिए पहली बार महिलाओं की खनन टीम को प्रशिक्षित किया है। हिंदुस्तान जिंक के सस्टेनेबिलिटी डेवलपमेंट गोल्स के तहत रेस्क्यू रूम रिफ्रेशर ट्रेनिंग (आरआरआरटी) की देखरेख और मार्गदर्शन में सात महिला अधिकारियों को राजपुरा दरीबा कॉम्प्लेक्स में प्रशिक्षित कर चयन किया गया। यह नवीन पहल कार्यस्थल में होने वाली किसी भी प्रकार की हानि को रोकने और खनन कार्यों में जीरो हार्म सुनिश्चित करने के उद्धेश्य से की गयी है।

जिंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अरुण मिश्रा ने कहा कि कठोर चयन प्रशिक्षण के बाद, सात महिलाएँ जिनमें सिंदेसर खुर्द खदान से चार, राजपुरा दरीबा कॉम्प्लेक्स से एक और जावर ग्रुप ऑफ माइंस से दो महाराष्ट्र में माइन रेस्क्यू स्टेशन, नागपुर में प्रारंभिक खदान बचाव प्रशिक्षण के लिए चयनित की गयी जिन्हें 14 दिनों के कठिन प्रशिक्षण के लिए भेजा गया था। इन सभी ने सफलतापूर्वक अपना प्रशिक्षण पूर्ण कर देश में माइन रेस्क्यू में पहली 7 महिलाएं होने का गौरव हांसिल किया है। प्रारंभिक परीक्षणों में इन सदस्यों को बुनियादी खदान आपातकालीन स्थिति में जानकारी जैसे सतह या भूमिगत खदान आपातकालीन परिदृश्यों, प्राथमिक चिकित्सा, अग्निशमन, का संपूर्ण प्रशिक्षण। इस प्रशिक्षण में तकनीशियन परीक्षण, सिद्धांत परीक्षा, स्व-बचावकर्ता, प्राथमिक चिकित्सा, अग्नि के प्रकार और इसकी बुझाने की विधि, खान गैसें और आपातकालीन प्रतिक्रिया जैसे महत्त्वपूर्ण बचाव पहलू शामिल थे।

वीआईएफटी में स्कील डवलपमेंट सेमीनार आयोजित

उदयपुर (ह. सं.)। फैशन शो इल्युमिनाती इस साल जुलाई में आयोजित किया जाएगा। इस शो में देश की नामी मॉडल्स के साथ स्थानीय मॉडल्स को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलेगा। प्रतिभागियों को मंच पर वॉक करने, बात करने, ड्रेसिंग सेंस, दर्शकों और निर्णायकों को प्रभावित करने के बारे में टिप्स देने के लिए वीआईएफटी में कौशल विकास सेमीनार आयोजिन किया गया जिसमें मानसिक संतुलन बनाए रखने के बारे में

महत्वपूर्ण जानकारी एमएलएसयू के पत्रकारिता विभागाध्यक्ष प्रो. कुंजन आचार्य एवं लाइफ कोच डॉ. नरेन गोयल द्वारा दी गयी।

संघ चेयरपर्सन आशीष अग्रवाल ने बताया कि जीवन में सफलता का मूल मंत्र आत्मकौशल है। जब हम अपनी कमियों की पहचान करके अपने कौशल को निखार लेते हैं तो बड़ी से बड़ी समस्या भी आसान लगती है। वीआईएफटी के सालाना फैशन शो इल्युमिनाती में स्थानीय प्रतिभाओं को भी अवसर दिया जा रहा है।

शब्द रंजन--- ज्ञान रंजन और बहु रंजन भी

शब्द रंजन केवल शब्दों का रंजन ही नहीं, सरस्वती का अनुरंजन भी है। इसमें आपकी बड़भागी आहुति इस रूप में भी हो सकती है। अपने प्रतिष्ठान तथा प्रियजनों की स्मृति निमित्त विज्ञापन सहयोग करें।

मुख पृष्ठ	10,000/- रूपये
अंतिम पृष्ठ	7000/- रूपये
साधारण पृष्ठ	5000/- रूपये
आधा पृष्ठ	3000/- रूपये
चौथाई पृष्ठ	2000/- रूपये

Shabd Ranjan, UCO BANK,
Bhupalpura Branch, Udaipur,
a/c no. 18450210000908,
IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c
कृपया रचनाएं, समाचार एवं विज्ञापन आदि ई-मेल से भेजें।
shabdranjanudr@gmail.com

विभिन्न जातियों में सत परीक्षण....

(पृष्ठ तीन का शेष)

म्हारे छैल भंवर रो कांगसियो
पणिहार्यां ले गई रे।
धमण धमाई लूं, गोला तपाई लूं
तातो तेल तलाई लूं रे
अणी कांगसिया रे कारणिये म्हूं
मंदर धीज धराइलूं रे।
पणिहार्यां ले गई रे।
पांच गाम रा पंच बुलाई लूं
चौड़े न्याव कराई लूं रे
पणिहार्यां ले गई रे।

अर्थात् लोहार की धौंकनी की तेज आंच से भट्टी पर उबलते-खौलते तेल में लोहे के गोले गर्म कर मंदिर पर पनिहारियों के हाथों में रख पता लगवाऊं कि प्रियतम का कंघा कौनसी परिहारिन चुराकर ले गई? इसके लिए पांच गांवों के पंचों को बुलाकर सबके सम्मुख खुली पंचायत में न्याय कराऊं। **5**

शास्त्र में तथा लोक के कहानी-किस्सों एवं किंवदंतियों में सत की परीक्षा की मुख्य धुरी महिला रही है। इसका एक कारण तो यह है कि महिलाओं की परख उनके चरित्र से की जाती है जबकि पुरूष का भाग्य ही प्रबल रहता है। कोई भी प्रामाणिक ढंग से न स्त्री के चरित्र के संबंध में कुछ कह सका है और न पुरूष के भाग्य को ही कोई व्यक्त कर सका है इसीलिए कहा गया- 'त्रिया चरित्रं पुरूषस्य भाग्यं देवो न जानेति।'

फिर नारी की संरचना जिस ढंग से हुई है वह भी उसके शील-सौंदर्य को अधिक उद्घाटित करने वाली है। परमात्मा ने भी उसे माहवारी देकर हर माह ही शरीर शुद्धि का उपहार दिया है। जिस उम्र में माहवारी रूक जाती है उस उम्र पर कोई अंगुली नहीं उठाता।

कालबेलियों में सत परीक्षण :

कालबेलिया समाज भी इससे अछूता नहीं है। एक विवाहिता ने किसी गैर व्यक्ति के साथ किये गये अपने अवैध संबंध का कारण अपनी माँ पर थोप दिया। पंचायत ने उसे दोषी मानते हुए बिना हत्थे के दो हथौड़े आग में गर्म करवाये।

वे जब सुर्ख लाल हो गये तो विवाहिता को दोनों धधकते हथौड़े अपने हाथों में लेने को कहा। वह उन्हें लेने को तैयार भी हो गई। इतने में उसकी माँ उठी और अपनी बेटी को निर्दोष बताकर उसका सारा दोष अपना होना स्वीकार किया। यह सुन पंच अवाक् रह गये। पंचों का सारा ध्यान विवाहिता की बजाय उसकी माँ पर केन्द्रित हो गया। उन्होंने उस विवाहिता को निर्दोष ठहराते हुए उसकी माँ को दोषी माना और किसी अगली बैठक में उसे परीक्षा के लिए हाजिर होने का हुकमनामा दे दिया। **6**

यही नहीं, युद्ध के लिए प्रस्थान करने से पूर्व रणबाज अपनी परिणिता की योनि को अनुभवी सुनारण से स्वर्ण नथ द्वारा नथवाने की रस्म करते। युद्ध से लौटकर उस नथ को खुलवाने की रस्म की जाती। इस वक्त बड़ा भोज दिया जाता। वह नथ थाल में सजाकर रखी जाती। रानी, ठुकरानी, राजकुमारी को मुंहमांगी बख्शीश दी जाती। पहला भोग ही उस नथ को दिया जाता। **7**

नट जाति में सत-परीक्षण :

सत की परीक्षा का रिवाज खानाबदोस किंवा घुम्मकड़ जातियों में अधिक देखने को मिलता है। इन जातियों में पुरूष और महिलाएँ दोनों व्यवसायरत रहते हैं तब स्वाभाविक है, महिलाओं का पाला पर पुरूष समाज से भी पड़ता है। वे उस समाज के सम्पर्क एवं संसर्ग में आती हैं तब कई तरह की भ्रांतियां भी उनके साथ जुड़ जाती हैं।

नट जाति भी इस परीक्षा से अछूती नहीं है लेकिन परीक्षा का जो सबब है वह राजनटों की अपेक्षा बामणिया नटों में बड़ा कठोर है। इस समाज में जब किसी स्त्री अथवा पुरूष के चरित्र के बारे में खुसुरफुसुर होने लगती है और परिवारवालों के अलावा अन्यों में भी बात फैलने लगती है तो उसे रोका नहीं जा सकता।

सामान्य सी हलचल होने पर तो परिवार वाले ही आपसी चर्चा में समझ-समझा लेते हैं पर जब इससे बात बनती नहीं दिखती है और यह लगता है कि इसमें ढील देना भी ठीक नहीं है, ऐसी स्थिति में मोतबीर लोग मिल तय करते हैं और पंच इकट्ठा करते हैं। ये पंच अपनी जाति के ही वरिष्ठ सदस्य होते हैं। उन्हें निमंत्रित किया जाता है। उनके लिए सभी तरह की सुविधाएँ जुटाई जाती हैं।

पंचों को एक जगह इकट्ठा करने का काम हलकारे के जिम्मे रहता है। राजस्थानी ख्यालों-तमाशों में भी हलकारा ऐसा ही महत्त्वपूर्ण पात्र होता है जो राज का संदेश लाने-लेजाने का काम करता है। राजा केसरसिंह के ख्याल में हलकारा कहता है- 'आयो हलकारो राजा केसरसिंह को नेपालकोट स्यूं।'

ऐसी स्थिति में पंच, महिला के श्वसुरगृह के व्यक्ति तथा पीहर पक्ष के लोग किसी निश्चित स्थान पर एकत्र होते हैं। पंच बारी-बारी से महिला, उसके पति तथा उसके परिजनों से पूछताछ करते हैं। दोनों पक्ष खुलकर अपना-अपना पक्ष रखते हैं। स्पष्टीकरण देते हैं। इसमें वे महिला-पुरूष भी अपना पक्ष रखते हैं जो उस घटना के साक्षी होते हैं। पुरूष अथवा महिला के निर्दोष होने पर उन पर लगा लांछन माफ कर दिया जाता है पर यदि दोषी पाये गये तो जैसा दोष वैसी सजा का उनके लिए प्रावधान होता है। इस प्रावधान में -

(1) दोषी द्वारा अपने सिर पर जूता रख गलती कबूल करना।
(2) हलकारा द्वारा दोषी के सिर पर जूते रखवाना।
(3) हलकारा द्वारा सजा के अनुसार जूतों से पिटाई करवाना।
(4) अपराधी के दोनों हाथ पीछे की ओर बांधना।
(5) अपराधी के गले में जूतों की माला डालना।
(6)दोषी को गड्ढे में खड़ा करना।
(7) गड्ढे में खड़ा कर घुटने या कमर तक मिट्टी भरना।
(8) दोषी द्वारा एक हाथ से पत्थर उठावाना।
(9) दोषी द्वारा अंगारों से निकलना।
(10) अंगारों को हाथ में लेकर निश्चित दूरी पार करना।
(11) खौलते तेल की कढ़ाई में हाथ डालना।
(12) खौलते तेल में पूड़ी तलकर हाथ से निकालना।
(13) काला मुँह कर, गधे पर उल्टा बिठा देश निकाला देना।

इस दृष्टि से देखा जाय तो इनकी सामाजिक व्यवस्था बड़ी अनुशासित और संगठित है। सारे झगड़े-टंटे, लड़ाई-फसाद ये अपने समाज की जाजम पर ही निपटाते हैं। बाहरी किसी व्यक्ति का सहारा नहीं लेते। पंच ही इनके लिए परमेश्वर रूप होते हैं। उनका निर्णय निष्पक्ष और सर्वोपरि स्वीकार्य होता है। ऐसे पंच फैसले और परीक्षण इनकी बिरादरी में होते रहते हैं।

कभी-कभी दोषियों की संख्या अधिक होने पर उनकी संयुक्त रूप से भी परीक्षा ली जाती है। यह परीक्षा अधिकांशत: तो किसी धर्मस्थल पर ही होती है। परीक्षा के बाद समाज वाले मिलकर मनमाफिक गोठ करते हैं।

ऐसा भी होता है जब समाज द्वारा एक बैठक में कोई निर्णय नहीं हो पाता है तब किसी अगले दिन अगली बैठक रखने का निर्णय लिया जाता है। यह भी होता है जब कोई महिला अपने ऊपर मढ़े गये लांछन की जिम्मेदार अपने घर की ही किसी वरिष्ठ महिला को ठहराती है। ऐसी स्थिति में पंचायत संबंधित महिला से पूछताछ करने का निर्णय देती है। **8**

ऐसी पूछताछ में कई परतें खुलती हैं। कभी-कभी बेउम्मीद आश्चर्यजनक परिणाम हाथ लगते हैं। ऐसी पंचायतों से कई फायदे भी हमें बताये गये। एक तो यही कि अपनी बात अपनी ही बिरादरी में रहे। माफी दे तो अपना समाज और सजा दे तो भी अपना समाज। दूसरा यह कि बात का बतंगड़ बनने से रह जाता है और इससे उपजने वाली कई तरह की, व्यर्थ की परेशानियां मिट जाती हैं। अन्यों में इस तरह की बात फैलने पर राई का पहाड़ बनते देर नहीं लगती। पूछताछ करने वाले भी इतने हो जाते हैं कि हर एक को उत्तर देते नहीं बनता और फिर आवश्यक नहीं कि जो स्पष्टीकरण दिया जाय वह सर्वमान्य, स्वीकार्य हो।

लेकिन यह प्रश्न तो बार-बार उठता और कचोटता ही है कि ये सारी परीक्षाएं महिला वर्ग की ही क्यों ली जाती है? पुरुषों में ऐसे परीक्षण की आवश्यकता क्यों नहीं उपजी? अकेले पुरुष से तो कभी कोई परिवार या समाज ही नहीं बना। महिला ही हर परिवार, समाज और राष्ट्र की रचयिता और धुरी रही है। यदि वह नहीं हो तो इन सामाजिक सारे सरोकारों का क्या अर्थ रह जाता है? संस्कृति के सारे संदर्भ, कला के सारे औचित्य महिला वर्ग से ही जगमगाहट पाते हैं। बावजूद इसके महिला ही सब ओर पुरुषों की आंख और निशाने पर चढ़ी रहती है। इन्हीं सारे संदर्भों, प्रसंगों और अवसरों को पैनी दृष्टि से निहारते आधुनिक युग की मीरां कही जाने वाली प्रख्यात लेखिका महादेवी वर्मा ने 'श्रृंखला की कड़ियां' में यह सटीक ही लिखा है। वे लिखती हैं-

'स्त्री पुरुष के वैभव की प्रदर्शनी मात्र समझी जाती है और बालक के न रहने पर जैसे उसके खिलौने निर्दिष्ट स्थानों से उठाकर फैंक दिये जाते हैं, उसी प्रकार एक पुरुष के न होने के जीवन का कोई उपयोग रह जाता है न समाज का गृह में उसको कहीं निश्चित स्थान ही मिल सकता है। जब जला सकते थे तब इच्छा या अनिच्छा से उसे जीवित ही भस्म करके स्वर्ग में पति के साथ विनोदार्थ भेज देते थे परन्तु अब उसे मृत पति का निर्जीव स्मारक बनाकर जीना पड़ता है जिसके सम्मुख श्रद्धा से नतमस्तक होना तो दूर रहा, उसे कोई मलिन करने की इच्छा भी रोकना नहीं चाहता। **9**

भारतीय पुरुष जैसे अपने मनोरंजन के लिए रंग-बिरंगे पक्षी पाल लेता है, उसी प्रकार वह एक स्त्री को भी पालता है तथा अपने पालित पशु-पक्षियों के समान ही वह अपने शरीर और मन पर अधिकार समझता है। हमारे समाज के पुरुष के विवेकहीन जीवन का सजीव चित्र देखना हो तो विवाह के समय गुलाब सी खिली हुई स्वस्थ बालिका को पांच वर्ष बाद देखिये। उस समय उसे असमय प्रौढ़ा, दुर्बल संतानों की रोगिन पीली माता में कौनसी विवशता, कौनसी रूला देने वाली करूणा न मिलेगी?' **10**

विश्व में सर्वप्रथम ज्ञान का प्रकाश देने वाले भारतीय पुरुष वर्ग के लिए आजादी के बाद भी क्या यह सवाल चिंतनीय नहीं है?

संदर्भ सूत्र :

(1) पड़ चितेरे श्रीलाल जोशी से भीलवाड़ा में उनके जोशी कला कुंज में हुई बातचीत, 08 जनवरी 1997
(2) राजस्थान की लोकव्रत संस्कृति, डॉ. कविता मेहता, द्रष्टव्य नलराजा-दमयंती रानी की कहानी, पृ. 149-156, सुभद्रा पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली, 2009
(3) ईमानदारी की परीक्षा देने गर्म तेल में हाथ डाले, प्रात:काल (दैनिक) उदयपुर, 10 जुलाई 2008, पृ. 8
(4) राजस्थान पत्रिका, उदयपुर, 01 अक्टूबर 2008, पृ. 18
(5) राजस्थान स्वर लहरी भाग एक, डॉ. महेन्द्र भानावत, भारतीय लोककला मंडल, उदयपुर, 1961, द्रष्टव्य म्हारा छैल भंवर रो कांगसियो गीत, पृ. 61
(6) अग्नि परीक्षा से बच गई महिलाएं, राजस्थान पत्रिका, उदयपुर, 04 नवम्बर 2008, पृ. 9
(7) अजूबा भारत, डॉ. महेन्द्र भानावत, संघी प्रकाशन, जयपुर, 2002, द्रष्टव्य गुप्तांग का गहना, पृ. 141-144
(8) लोककलाओं का आजादीकरण, डॉ. महेन्द्र भानावत, मुक्तक प्रकाशन, उदयपुर, 2002, द्रष्टव्य सूली ऊपर सेज नटों की, पृ. 59
(9) श्रृंखला की कड़िया, महादेवी वर्मा, पृष्ठ 16
(10) श्रृंखला की कड़िया, महादेवी वर्मा, पृष्ठ 102

यात्रावृत्त : बीकानेर में बारह दिन (2)

-डॉ. महेन्द्र भानावत-

बीकानेर एक्सप्रेस वाले मनोहर चावला :

04 मार्च। श्री मनोहर चावला से पहले कभी मिलना नहीं हुआ। जब उनकी सार्वजनिक जनसम्पर्क अधिकारी से सेवानिवृत्ति हुई तब से सम्भवत: साप्ताहिक 'बीकानेर एक्सप्रेस' निकालना शुरू किया जो वे मुझे भी भेजते रहे। मैं भी उसमें यदाकदा कुछ लिखता-छपता रहा। उनका जनसम्पर्कीय जगत बहुत विस्तार लिये रहा सो मुझ लेखक का भी उसमें छपने वालों से स्वत: परिचय होगया। कुछ तो उसमें नियमित स्तंभ ही लिखते सो अनुभवी लोगों के प्रामाणिक विचारपरक विचारों से एक नई दृष्टि से सोचने-समझने का अवसर हाथ लगा। ऐसे बड़े मनोयोग से अपनी लेखनी से अपनी तथा अपने साप्ताहिक की लूंठी पहचान बनाने वाले चावलाजी मेरे मन-मानस में ऐसे पैठ गये कि बीकानेर जाते ही पहले उनसे मिला।

मनोहर चावलाजी के वहां सुबै-ही-सुबै पहुंच गये। वे अपने पूरे घर की जल छिड़कावी सफाई से मुक्त हुए ही थे कि अचानक हमारे परिचय से इतने खुश हुए कि दो घण्टे तक हमें उन्होंने अपने मृदुल व्यवहार, मैत्री मिठास घोलती स्वादिष्ट खानपान देती मनुहारों के साथ लगा कि उनका साहित्यिक परिवेश अनेक संस्मरणों की अखूट खदान लिए सम्मोहित करने की ताजगी लिये है। आत्मीयता

मोबाईल में महकते बीकानेर एक्सप्रेस की वांदरवाल दिखाते मनोहर चावला

का ऐसा अहोभागी दरसाव, बिना किसी पूर्व गहरी जान-पहचान, बिरले ही दे पाते हैं।

यह भी लगा कि उन्होंने मेरे लेखन को भी बड़ी गम्भीरता से पचा रखा है जिसका उन्होंने जिस शब्दावली में विश्लेषण-विवेचन किया, अब आपसी घनिष्टता वाली मैत्री में भी नहीं रह गया है। लोग अच्छे मित्रों के बारे में भी अब कई तरह की बेढ़ब टिप्पणियां करने लग जाते हैं। ऐसे में मनोहरजी का जो असर मेरे पर रहा वह सचमुच का सौ टंची शुद्ध सांचा ही रहा।

उनके मोबाईल-तंत्र से अनेक बंधु जुड़े हैं जिसके सहारे हमारी इस मिलन मैत्री पर भी उन्होंने यह खबर साझा की, ऐसा मुझे कुछ मित्रों ने भी कहा जिन्हें यह ज्ञात ही नहीं था कि मैं बीकानेर में हूं और चावलाजी से मिल रहा हूं। यह दिगर बात है कि मैं मोबाइल रखते हुए भी उसके उन तमाम उपयोगी तंत्रों से बेखबर हूं। केवल घंटी लगने पर बात करने के अलावा मैं इस संस्कृति के संस्कारों से सर्वथा विहीन बना हुआ हूं, यह महसूस करते हुए कि मुझे भी कुछ तो अबतक सीख जाना चाहिए था पर पता नहीं, मन रमता ही नहीं पर मेरा सारा काम तुक्तक के साथ जो साथी काम करते हैं उनसे भलीप्रकार चल जाता है तब ही तो उनके भरोसे व विश्वास से 'शब्द रंजन' पाक्षिक गत आठ वर्षों से नियमित निकल रहा है।

हां, मनोहर चावलाजी ने अपने बीमार होने का भी बीच-बीच में जिक्र किया पर उन्होंने बीमारी को अपना अंगीरस नहीं बनाया। यदि वे नहीं कहते तो ऐसा शायद ही अनुमान लगता। हां, उम्र तो सभी को अपना पता बता देती है सो मैं और वे एक ही थैले के चट्टेबट्टे हैं। साल-दो-साल की लोड़ी-बड़ी उम्र कोई खास मायने नहीं रखती। मैंने कहा भी कि बीमारी को कुत्ते की तरह पालने वाले अधिक स्वस्थ तथा हंसमुख रहते हैं और उनका मन भी मरूं-मरूं करने की बजाय कुछ-न-कुछ सार्थक करूं-करूं की जीवटता लिए रहता है। कुत्ते को उसका चाहा खानपान देदो। वह चुपचाप अपने पास वफादारी मुद्रा लिए बैठा रहेगा। बीमारी को भी मनचाही दवाई चखादो और अपना सत्कर्म करते रहो। सो हमारी यह मुलाकात कई दृष्टियों से सार्थक होती, पूरे दिन को ही सुजलाम सुफलाम शकुन देने वाली रही।

स्मृति सुजान डॉ. मदन केवलिया :

04 मार्च। भाई साहब डॉ. नरेन्द्र भानावत के डूंगर कॉलेज के सहपाठी रहे डॉ. मदन केवलिया (89) यों तो स्वस्थ ही लगे पर

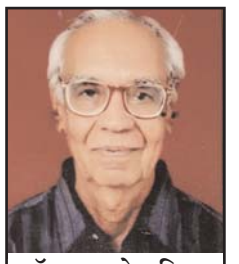

डॉ. मदन केवलिया

नैत्र-दृष्टि कुछ कमजोर होने से आवाज के सहारे पहचान लेते हैं। बोले, इसे अविश्वसनीय सुखद आश्चर्य ही कहा जाएगा कि कल ही उन्होंने मुझे याद किया और आज अप्रत्याशित और सर्वथा अकल्पनीय साक्षात भेंट हो गई। बताया कि उनकी याददाश्ती बड़ी तेज है जबकि इस उम्र में आकर कई लोग स्मृति विहीन हुए लगते हैं। बोले, एक साहित्यिक समारोह में मंच पर नरेन्द्र काव्यपाठ कर रहे थे और तुम सभागार के दरवाजे के पास खड़े-खड़े कविता सुन रहे थे। उनका कथन मैं बड़े गौर से सुनता रहा पर मुझे उसकी कोई स्मृति नहीं रही।

मैंने कहा भी कि मैं 1958 तक यहां पढ़ा। बी.ए. बाद उदयपुर चला गया। वे बोले, यह 1957 की बात है। इसी क्रम में जब मैंने हिन्दी प्राध्यापक प्रो. चन्द्रदेव शर्मा का जिक्र किया कि वे छात्रों के प्रति अपनी सहृदय आत्मीयता और मिलनसारिता के कारण बड़े लोकप्रिय थे और उतने ही अच्छे कवि थे। उनकी सर्वप्रसिद्ध कविता 'रामचन्द्र कह गये सिया से ऐसा कलियुग आयेगा' सबकी जबान पर थी। बाद में तो फिल्मी गीत के रूप में यह कविता और अधिक चर्चित प्रभावी बनी।

इस पर केवलियाजी ने एक और घटना का स्मरण करते बताया कि प्रो. चन्द्रदेव को हम लोग अभी भी भूले नहीं हैं। अब वैसा समय, माहौल और वैसे गुरुजी नहीं मिलेंगे। हुआ यों कि नरेन्द्र और उनके एक साथी को वादविवाद प्रतियोगिता में बोलने जाना था पर वह साथी उस दिन कॉलेज में नहीं आया तो चन्द्रदेवजी ने मुझे बुलाकर कहा कि आज संध्या को नरेन्द्र के साथ वादविवाद प्रतियोगिता में बोलने जाना है। यह सुनते ही मैं गड़बड़ा गया। बोला, ''गुरुजी मैंने तो कभी भी ऐसी प्रतियोगिता में भाग लेना तो दूर भाषण तक नहीं दिया है और मेरी कोई रूचि भी इस ओर नहीं है।''

यह सुन चन्द्रदेवजी ने मेरी पीठ पर हाथ रखते कहा, ''इसमें घबराने की कोई बात नहीं है। प्रतियोगिता में अभी चार घण्टे शेष हैं। मैं सारी तैयारी करवा दूंगा। नरेन्द्र तो प्रथम आ ही जायेंगे मगर तुम्हें भी बाजी मारना है।'' मेरे लिए 'ना' करने की कोई गुंजाइश नहीं थी। गुरुजी ने विषय की पूरी तैयारी करा मेरी हिचकिचाहट दूर की और मैं पहलीबार नरेन्द्र के साथ बोला। नरेन्द्र तो प्रथम घोषित हुए ही लेकिन मैं भी द्वितीय रहा। उसका सर्टिफिकेट आज भी मेरे पास सुरक्षित रखा हुआ है।

केवलियाजी भोजन कर हमसे मिलने आये ही थे अत: उन्होंने तो कुछ नहीं लिया मगर पूरे समय में बीतचीत के दौरान हमारी मनुहार करते रहे सो हम उनकी मनुहार नहीं टाल सके। इस बीच उनके सुयोग्य पुत्र शरद केवलिया हमारे साथ निरन्तर बने रहे। शरदजी यों तो सार्वजनिक जनसम्पर्क अधिकारी के रूप में सरकार में सेवाएं देते रहे पर अभी राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी में सचिव के पद पर कार्यरत हैं। अपनी पढ़ाई के दौरान मैं केवलियाजी के अग्रज पुरुषोत्तमजी केवलिया से भी नवयुग ग्रंथ कुटीर में मिला। वे उन दिनों पत्रकार के रूप में अच्छी पहचान लिये थे। नवयुग ग्रंथ कुटीर में तब मैंने शंभुदयालजी सक्सेना के भी दर्शन किये थे। वे सधे हुए लेखक थे। इन्टर में हमने उनका लिखा वल्कल एकांकी पढ़ा, ऐसी स्मृति है। उनके पुत्र शेखरजी का मेरे प्रति बड़ा स्नेह था। मुझे उनकी कई स्मृतियां हैं पर अब तो वे भी स्मृतिशेष हैं।

पैंसठ वर्ष बाद छंगाणीजी से मिलन :

05 मार्च। सन् 1956-58 के सत्र में डूंगर कॉलेज के बी. ए. के मेरे सहपाठी शिवराज छंगाणी अधिक समय नहीं हुआ, राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी के अध्यक्ष मनोनीत किये गये हैं। इसका दफ्तर बीकानेर में ही है। भीतरी शहर की संकड़ी गलियां पार करते बमुश्किल ही हम उनके निवास पहुंचे। पैंसठ वर्ष बाद कोई भी साथी अपने हमदोस्त से अकस्मात मिल कितना खुशानन्द महसूस करता है, इसकी कोई भी कल्पना कर सकता है।

मानिकचन्द सुराना तब डूंगर कॉलेज छात्रसंघ के अध्यक्ष थे। हमने सिल्वर जुबली बड़ी धूमधाम से मनाई थी। प्रतिदिन निकलने वाले बुलेटीन का मैं सम्पादक था। तब टी. सी. मैथ्यू प्रिंसिपल थे। अंग्रेजीदां छोटी थड़ी के मैथ्यू बड़े हंसमुख थे। ऊंचा कोट-पेंट पहना करते तब वहां के छात्र कहते, ये फस्ट ईयर की पोशाक का बड़ी

पुरानी यादों में डूबते इतराते छंगाणी शिवराज और भानावत महेन्द्र

शालीनता से अब तक उपयोग कर रहे हैं। वहीं पहलीबार भीलवाड़ा के जीवनसिंह राजनीति विज्ञान के व्याख्याता बनकर आये थे। नया व्याख्याता अपने भीतर का असमंजस चाहकर भी नहीं छिपा सकता। वह छात्रों पर रौब गालिब भी नहीं कर सकता और अपने इम्प्रेशन को कमजोर भी नहीं होने देता। उसे प्रिंसिपल की देखरेख में भी खरा उतरना होता है। जीवनसिंहजी को मैंने डरते-डरते बुलन्द होते देखा। पढ़ाते समय कभीकभाक वे खिड़की बन्द कर कवितापाठ भी करने लगते। मेवाड़ की तुलना में बीकानेर के छोकरे छंटे हुए ही होते हैं, ऐसा वहां के छात्रों से मुझे कईबार सुनने को मिला।

मानिकचन्द बाद में पूरे राजनेता होगये। राज्य के वित्तमंत्री के रूप में उनकी अच्छी पैठ रही। मृत्यु के कोई तीन माह पूर्व मैंने फोन पर उनसे बात की तो बोले, 'इतने वर्ष कहां छिपे रहे?' मैंने कहा, 'मित्र लोग राजनेताओं से दूरी रखना अच्छा समझते हैं।' इस पर वे हंसते बोले, 'अरे भाई, मैं वैसा नहीं था।' सच ही है, शिवराजजी भी उनकी कई यादों को साझा करते रहे।

गजानंद वर्मा की स्मृति :

इसी जुबली में हुए कवि-सम्मेलन में पहलीबार मैंने गजानंद वर्मा को उनकी प्रसिद्ध कविता 'बाजरे की रोटी पोई पोपलिया को साग जी' सुनी जिसका गुंजन अब भी मिठास दे जाता है। बाद में तो वे कलकत्ता में भी मुझसे मिलने आये और 'सोनो निपजे रेत में' अपनी राजस्थानी गीत-पुस्तक भी भेंट की। अन्तिम बार उनसे बीकानेर में उपध्यानचन्दजी कोचर ने भेंट कराई तब वे बड़े अस्वस्थ थे और हॉस्पिटल के लिए निकल ही रहे थे सो हम गये-आये ही रहे।

- क्रमश:

तहलका मच जायेगा

ओ प्रकृति रूपा शक्तिशाली नारी!
इतनी कायर शक्तिहीन तू क्यों हुई कैसे?
सह रही है वासना कांडों का यौन उत्पीड़न
शोषण निर्मम हत्याएं बर्बर हिंसा
क्यों नहीं लगा रही बढ़ती हैवानियत पर अंकुश?
क्यों दे रही ईंट का जवाब पत्थर से?
कौन दे रहा तुझे देगा तुझे सुरक्षा, करेगा रक्षा,
आज अपनी रक्षा खुद कर
थोड़ा साहस कर लीक तोड़
अपने पास हर वक्त चाकू छुरी रख
और दुष्कर्मी अंग काट, छेद
काट कर तो देख
रेप गैंग रेप बलात्कार का
ज्वार, बुखार उतर जायेगा
समाज में तहलका मच जायेगा
वातावरण में आज फैली बीमारी
रुग्ण विकृत मानसिकता हिंसा का
यही पहला और अंतिम इलाज है।

- मालती शर्मा

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।